卐 अनुभव दर्शन 卐

(श्री योगीराज के पावन चरणों बिताये गये २१ सालों के अद्‌भुत अनुभवों की एक झलक)

लेखक का संक्षप्ति परिचय:-

लिंबडी निवासी स्व. श्री चंपकलाल झवेरचंद शाह श्री योगीराज के अनन्य भक्त थे। आपका जन्म आषाढं वद् ४ वि.सं. १९४८ (दिनांक ११ जुलाई, १९८२) लिंबडी (गुजरात) में हुआ था। आपका जीवन बहुत ही सादा और सरल था। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा आपने अपने गाँव में ग्रहण की। तत्पश्चात् व्यवसाय हेतु आप मुंबई आये। कुछ साल नौकरी करने के पश्चात आपने अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया । ३० वर्ष की उम्र में भागीदार सेठ कानाजी की प्रेरणा से आबू में श्री योगीराज से संपर्क हुआ । श्री योगीराज का इन पर ऐसा जादू चला कि इन्होंने अपने जीवन का ज्यादातर हिस्सा श्री योगीराज के सान्निध्य में व्यतीत किया। श्री योगीराज के पावन चरणों में बिताये गये २१ सालों में इन्हें जो अद्‌भुत और चमत्कारिक अनुभव हुए और जो-जो मुख्य घटनाएँ घटित हुई, उसका संक्षिप्त विवरण आपने "अनुभव – दर्शन" नामक छोटी से गुजराती पुस्तक में प्रास्तुत किया है।

"शांति -ज्योति" के सुज्ञ और श्रद्धालु पाठकों के लिये हम इसे धारावाहिक रुप से हिन्दी भाषा में प्रकाशित कर रहे हैं ।

नोट :- लेखक का पाठकों से विशेष अनुरोध है कि वे अपनी विवेक बुद्धि का उपयोग कर इस लेख से जो सार ग्रहण करने योग्य है, वह ग्रहण करे । बाकी नजरंदाज कर दे; क्योंकि योगियों की लीलाएँ विचित्र होती हैं, जो साधारण इन्सान की समझ से परे है।

।। ॐ श्री गुरुदेवाय नमः ।।

स्त्रीणां शतानि शतशो, जनयन्ति पुत्रान् ।

नान्या सुतं त्वदुपमं, जननी प्रसूता ।।

सर्वा दिशो दधति भानि, सहस्ररश्मिं ।

प्राच्येन दिग् जनयति, स्फुरदंशुजालम् ।।

भावार्थ - सैकड़ों स्त्रीयाँ सैकड़ों पुत्रों को जन्म देती हैं। लेकिन दूसरी किसी ने आप जैसे पुत्र को जन्म नहीं दिया है। सभी दिशाएँ नक्षत्र धारण करती है, लेकिन प्रकाशमान किरणों का समूह है जिसमें,ऐसे सूर्य को तो सिर्फ पूर्व दिशा ही धारण करती है।

धन्य है वह भूमि ,वह दिन और वह घड़ी, जिस दिन आबू पहाड़ की पवित्र भूमि, श्री देलवाड़ा में मुझे एक महापुरुष के दर्शन का अपूर्व लाभ प्राप्त हुआ।

संवत १९७८ में मेरे भागीदार शेठ श्री कानाजी नेमाजी श्री मेडा (मारवाड़) वालों के मुख से मैंने यह सुना कि आबू में श्री शांति विजयजी बापजी बहुत प्रभावशाली है और ज्योतिष में तो प्रखर पंडित हैं । अतः मुझे उनके दर्शन करने की इच्छा हुई और सेठ कानाजी के साथ संवत १९७८ में वैशाख महिने में मैं आबू गया । प्रथम समागम में ही मैं वैशाख शुक्ला से जेठ महिने के अन्त तक करीब पौने दो माह तक गुरु-चरणों में रहा । सेठ श्री कानाजी की प्रेरणा से मुझे इन महापुरुष के अमूल्य दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ, इसलिये मैं सेठ कानाजी का सदैव ऋणी हूँ।

संवत १९८७ में पहली बार लींबड़ी (गुजरात) के ठाकुर साहब और उनकी सेक्रेटरी मिस शार्प श्री योगीराज के दर्शन के लिये पधारे । उनकों इस हद तक लगनी लगी कि वे बार-बार श्री योगीराज के दर्शन के लिये आते थे। पालनपुर के नवाब भी इसी अरसे में श्री योगीराज के दर्शनार्थ पधारे थे। सिरोही, जोधपुर, जयपुर आदि के राजा – रजवाडे भी समय - समय पर श्री योगीराज के दर्शन के लिए आते थे। छोटे-बड़े राजाओं

को श्री योगीराज यह उपदेश देते थे कि तुम्हारे राज्य में नशाबंदी होनी चाहिये । धार्मिक स्थानों पर देवी-देवता के नाम से जो पशु-वध किया जाता है, वह भी बंद होना चाहिये।

श्री योगीराज के उपदेश का रजवाड़ों पर अच्छा असर पड़ा । परिणाम – स्वरुप कई छोटे-मोटे राज्यों में पशुवध बंद व मद्यनिषेध लागू कर दिया गया । श्री योगीराज राजाओं को यह बोध देते थे कि वे प्रजा को अपनी सन्तान समझे और उनका न्याय के साथ पालन -पोषण करें । इस बात का भी उन पर अच्छा असर पड़ा। श्री योगीराज निष्काम भाव से प्राणी -कल्याण करते थे। श्री योगीराज से प्रथम परिचय में ही उन्होंने मेरे प्रति जो प्रेम दर्शाया , वह अद्‌भुत, अलौकिक व अपार था । इस प्रेम के कारण ही मैं प्रतिवर्ष आपके दर्शनार्थ समय- समय पर जाता था। लगभग पौने दो महिने रहने के पश्चात् मेरे विदा होने के कुछ ही दिन बाद श्री बीकानेर महाराजा भी श्री योगीराज के दर्शनार्थ पधारे। श्री योगीराज के प्रति उनकी भक्ति उत्कृष्ठ थी, जिसका वर्णन मैं आगे करुँगा ।

श्री योगीराज के दर्शनार्थ बार -बार जाने का मेरा हेतु सिर्फ लक्ष्मी- प्राप्ति था, तथा श्री योगीराज भी मुझे समय -समय पर आश्वासन देते थे। इसमें श्री योगीराज का लक्ष्य मुझे निष्काम भक्तिकी ओर प्रेरित करना था , जिसे मैंने लगभग बारह वर्ष पश्चात सं. १९९० में अनुभव किया । इसके बाद मैं निष्काम सेवा-भक्ति की ओर झुकता गया। यह आप श्री की कृपा का ही परिणाम था।

संवत १९८१ में मैने काजू का व्यापार श्री वेटापालम (आंध्र प्रदेश) में शुरु किया तथा उसी समय से मेरी जिन्दगी ने पलटा खाया । लीलाधर नामक एक ब्राह्मण, जिसने गिरनार पर्वत पर पूरे बारह वर्ष रह कर योगीराज श्री गुरु -गिरनारी की पूर्ण कृपा- दया प्राप्त करके आत्मज्ञान संपादन किया था, वह महान् शिवभक्त अपने गुरु की आज्ञा से पहली बार एक रसोइये के रुप में श्री वेटापालम आये और पहली बार उन्होंने मुझे शिवभक्ति की ओर अग्रसर किया। सिर्फ आठ दिन के परिचय में हीं मैं उस ब्रह्मण को महान् शिव-भक्त के रुप में पहचान गया तथा उनको रसोइये का काम बन्द करवा कर उनकी सेवा तथा उनकी आज्ञा का पालन करने लगा । छः महिने तक उन्होंने मेरी कठोर

से कठोर परीक्षा ली और कसौटी पर कसा । साथ ही साथ अनेक प्रभावों व चमत्कारों का दिग्दर्शन कराया ; जिनका वर्णन सिर्फ शास्त्रों में पढ़ा था, उनका प्रत्यक्ष अनुभव कराया । लगभग छः महिने मैंने शिवभक्ति और ब्रह्मण गुरु की सेवा में व्यतीत किये । अनेक चमत्कारी अनुभवों के साथ – साथ कई अग्नि परीक्षा जैसी कसौटियों से भी गुजरा, जिसका यहाँ पर वर्णन करना मैं उचित नहीं समझता । मैंने जो ग्रहण किया उसका सार यही है, "ईश्वर की भक्ति करना ही मोक्ष प्राप्ति का सर्वोत्तम उपाय है। श्री गुरुदेव को तन-मन-धन सर्वस्व अर्पण करने से, सद्गुरु की आज्ञा का पूर्ण रुप से पालन करने से और केवल सद्गुरु की अनन्त कृपा से सहज ही मुक्तावस्था प्राप्त होती है। हालांकि तलवार की धार पर चलना सम्भवतः आसान है, परन्तु महापुरुषों की सेवा और आज्ञा का पालन करना अत्यन्त कठिन है। सद्गुरु स्वयं ही कृपा करके भक्तों का बेड़ा पार लगाते हैं । इसमें भक्त की योग्यता होनी चाहिये।"

छः महिने बाद ब्राह्मण भक्त-राज ने प्रस्थान करते समय फरमाया -----

१) तुम आबू पर्वत पर तुम्हारे जैन साधु – महात्मा के दर्शन को जाते हो, वे जगत के महानतम् योगीराज है। तुमने उस महान् विभूति (योगीराज) को बराबर पहचाना नहीं । अतः अच्छी तरह पहचान कर उनके पावन चरण कमलों में तन-मन-धन सर्वस्व अर्पण कर उनकी संपूर्ण आज्ञा का भली - भाँति पालन करना।

२) आज से तीन साल के भीतर एक सत्-पुरुष तुम्हें मिलेंगे । वे यदि अग्नि-परीक्षा जैसी कसौटी पर कसते हुए तुम्हारा शीश भी मांग ले तो देने से चूकना नहीं ।

उक्त ब्राह्मण भक्तराज अपने देश महादेवपुरी कोटडी (कच्छ) जाने के बाद भी मेरे लिये वहाँ से उपदेश -रुप में काव्य रच कर डाक द्वारा भेजते थे। उन्होंने मेरे लिये दो हस्तलिखित पुस्तकें तैयार की और तीन साल के पश्चात् वे पुस्तकें मुझे देने के लिए चमत्कारिक रुप से वेटापालम पधारे। लेकिन किसी व्यक्ति ने वे पुस्तकें उनकी पेटी से चुरा ली। पूरे एक साल बाद चुराने वाले व्यक्ति के पास से

वे पुस्तकें मुझे मिल गई, जो एक चमत्कार से कम न था । उन पुस्तकों को पढ़ने के पश्चात् मुझे यह दृढ़ निश्चय हो गया है कि ये ब्राह्मण भक्तराज कोई मामूली ब्राह्मण भक्त नहीं है, अपितु समर्थ आत्मज्ञानी महापुरुष है और वेदादि समस्त शास्त्रों में पारंगत है। बाद में उनसे मिलने की मेरी तीव्र इच्छा थी, लेकिन किसी कारणवश पुनः भेंट न हो सकी । संभवतः संवत १९८७-८८ में पोरबंदर में उनका स्वर्गवास हो गया । मेरे मित्र भाई वीरजी शिवजी कच्छवाले, जिन्होंने मेरा समागम ऐसे भक्तराज से कराया, मैं उनका अत्यंत ऋणी हूँ।

मेरे बुआ के लड़के भाई श्री चिमनलाल मनिहार श्रीमद् राजचन्द्र के परम भक्त थे। उनकी खूब सिफारिश से मैंने श्रीमद् राजचन्द्र की पुस्तकें संवत १९८२ में मुंबई से खरीदी थी। इधर मेरा काजू का व्यापार बंद होने से मैंने चार महिने तक उन पुस्तकों का नित्य - नियम से अच्छी तरह अध्ययन किया और जो कुछ मैंने ब्राह्मण भक्तराज से सीखा और अनुभव किया था उस पर इन पुस्तकों ने मोहर लगा दी । उन पुस्तकों को पढ़ने से मुझे अपूर्व लाभ हुआ। मेरी मान्यताओं और विचारों में जबरदस्त परिवर्तन आ गया।

महापुरुष ऐसी चित्र-विचित्र दशा में वर्तन करते हैं और ऐसी अस्पष्ट भाषा में बातचीत करते हैं कि उस समय उस महापुरुष को सहज में पहचान पाना अत्यन्त मुश्किल होता है। यहाँ तक कि देव और महेन्द्र भी नहीं पहचान पाते । लेकिन यदि महापुरुष स्वयं कृपा करके सामान्य मनुष्य को अपनी पहचान दे , तो उनको पहचानना सरल हो जाता है । ऐसे महापुरुष के चरण -कमलों में तन-मन-धन सर्वस्व अर्पण करने से तथा उनकी आज्ञा का यथार्थ रुप में पालन करने से मुक्तावस्था सहज ही प्राप्त हो जाती है, ऐसा मेरा दृढ़ निश्चय हो गया । इसके अलावा पुरानी मान्यताओं में भी जबरदस्त परिवर्तन हो गया, इसके लिये मैं स्व. डॉ. चिमनलाल मनिहार का आभारी हूँ।

श्रीमद् राजचन्द्र की पुस्तकें पढ़ने के पश्चात् मेरे मन में कुछ संशय भी पैदा हो गये , जिनका समाधान ढूँढना मेरे लिये अति आवश्यक था । इसके निवारण के लिये मैंने आबू में श्री योगीराज को लम्बे- लम्बे पत्रों द्वारा प्रश्न पूछे, जिसके

जवाब में उन्होंने एक यूरोपियन भक्त द्वारा सिर्फ दो पंक्तियाँ लिखवाई, **"अनुभव से तमाम संशय दूर हो जाते हैं।"**

संवत १९८४ में मुझे एक जरुरी कार्यवश करीब डेढ़ मास कलकत्ता में रहना पड़ा । वहाँ मुझे **"कल्याण"** नामक पत्रिका के वार्षिक अंको को पढ़ने का अवसर मिला। जिनके पठन से मेरी भक्ति दृढ़ हुई। एक समय मैं गंगा किनारे दोपहर लगभग १२ बजे एकाग्रचित सूर्य की ओर मुँह करके पानी में खड़ा था। पीछे से पानी की एक भयंकर लहर मेरी ओर मार करती हुई आती देख एक आठ साल के बालक ने बंगला भाषा में जोर से आवाज दे कर मेरा ध्यान खींचा।

मैंने थपेड़ों और ज्वार को बिल्कुल पास में आता देखा और किनारे की ओर भागा। ४-५ फीट उँचे थपेड़ों की वजह से बाहर की ओर गिर गया, लेकिन मेरे प्राण बच गये। उस बंगाली बालक को पुरस्कार देने हेतु मैंने उसे बहुत खोजा, परन्तु उसका पता न चल सका। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो किसी दैविक शक्ति ने बालक के रुप में आ कर मेरे प्राण बचाये ।

कलकत्ता का कार्य पूर्ण होने के बाद भादवा वद ७ संवत १९८४ के दिन मैंने मुंबई की ओर प्रस्थान किया । ट्रेन में बहुत ज्यादा भीड़ थी व बढ़ती जा रही थी। मैंने एक यात्री से इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि कल जन्माष्टमी है, अतः लोग गाडरवाडा के निकट एक महात्मा जो. **"धुनी वाला दादाजी"** के नाम से प्रसिद्ध है और जिनकी उम्र १२० साल है, उनके दर्शन के लिये जा रहे हैं। मुझे भी उन महापुरुष के दर्शन की तीव्र इच्छा हुई, अतः मैं गाडरवाडा स्टेशन पर उतर कर दादाजी के आश्रम पहुँच गया। लगभग पाँच- सात हजार लोग दर्शन के लिये आये थे, इसलिये मुझे ठहरने के लिये जगह मिलना मुश्किल था। लेकिन एक सन्यासी, जो गृहस्थाश्रम में एक मेजिस्ट्रेट थे, उनकी झोपड़ी में मुझे ठहरने की जगह मिल गई । सन्यासी बहुत ही भले, तीव्र बुद्धिवाले और दयालु थे। मैंने कलकत्ता से जो श्रेष्ठ किस्म के मावा – मिठाई और फल वगैरह अपने बच्चों के लिये खरीदे थे, वे सब दादाजी के चरणों में भेंट धरने की मेरी इच्छा हुई। सन्यासी

की मदद से मुझे थाल वगैरह मिल गये और उनमें फल-मेवा-मिठाई, हार,कर्पूर, अगरबत्ती वगैरह सजा कर शाम करीब ४ बजे "दादाजी" के दर्शनार्थ गया । मैंने तमाम नैवेद्य उनके समीप धर दिये, जिसमें से एक-एक चीज मुझे प्रसाद रुप में वापस दी गई। फिर आरती करके उनका चरणामृत पीने के लिये मैंने उनके दाहिने अँगूठे का स्पर्श किया । स्पर्श करने के साथ ही दादाजी ने जोर से आवाज लगाई कि हट जाओ-हट जाओ। लेकिन मेरे नहीं हटने से दादाजी जोर से मेरी पीठ पर डंडे मारने लगे । लगभग २०-२५ डंडे खाने के बाद भी जब मैं नहीं हटा तो दादाजी ने मध्यम अँगुली का टोला बनाकर मेरे सिर पर मारा । इससे मेरा सिर फट गया और मेरे सिर से रक्त की धारा बहने लगी । मेरे सारे कपड़े लहू-लुहान हो गये । उस वक्त दादाजी के चार शिष्य मुझे वहाँ से उठाकर धूनी के पास ले गये और धूनी में से राख निकाल कर मेरे सिर पर लगाई, जिससे मेरा रक्त बहना बन्द हो गया । शिष्यों ने किसी भी डॉक्टर - वैद्य से इलाज कराने का मना कर दिया और कहा कि घाव तीन दिन में स्वतः ठीक हो जायेगा ।

जब उपरोक्त घटना घटी, उस समय "दादाजी" के मंडप में विशाल जन-मेदनी थी । जब मैं सन्यासी के आश्रम जाने लगा तो लोगों को यह कहते सुना कि मुंबई वाला सेठ तो निहाल हो गया । उस पर "दादाजी" की असीम कृपा हुई है । ऐसा मौका तो किसी भाग्यशाली को ही मिलता है । सन्यासी जी के आश्रम से मैं नदी पर गया और वहाँपर रक्त वाले कपड़े धोये । फिर स्नानादि से निवृत होकर रात को १२ बजे कृष्ण जन्म की प्रसादी ले कर "दादाजी" के आश्रम से सन्यासी जी के आश्रम आया। उस समय डंडों की मार से बहुत ही पीड़ा होने लगी । न तो मैं बैठ सकता था और न ही सो सकता था । उस समय सन्यासी ने "दादाजी" के चमत्कारों का संक्षिप्त परिचय दिया जो अद्भुत था। साथ ही यह भी बताया कि "दादाजी" सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय तक किसी को नहीं मारते और न ही अन्य किसी कसौटी पर कसते हैं। यह सुनकर मेरा भय दूर हुआ और मैं रात्रिमे करीब ३ बजे "दादाजी" के दर्शन के लिये गया । बीच रास्ते में ही "दादाजी" के एक

शिष्य ने मुझे कहा कि दादाजी तुम्हें बुला रहे हैं रात्रिके ३ बजे से लेकर प्रातः ५.३० बजे तक **"दादाजी"** के समीप एकान्त में मुझे जो अपूर्व आनन्द मिला, वह अवर्णनीय है। मार खाने के अलावा मुझे भक्ति की कसौटी पर भी कसा गया जिसमें मुझे **"दादाजी"** ने ही पार लगाया और फिर बुलंद आवाज में संस्कृत के श्लोकों और चटपटी हिन्दी भाषा में मुझ पर आशीर्वाद की खूब वर्षा की। फिर दूसरे दिन मैं गाडरवाडा से प्रस्थान कर मुंबई चला गया। ट्रेन में सारी रात मुझे "दादाजी" की मूर्ति मेरे समीप दिखाई दी।

ब्राह्मण भक्तराज ने संवत १९८१ के आसोज माह में फरमाया था कि **"तीन वर्ष के भीतर कोई महापुरुष मिलेंगे । उनकी कसौटी में अगर शीश भी देना पड़े तो चूकना मत ।"** उनके कथनानुसार ही २ वर्ष १० मास के बाद यह दादाजी वाला प्रसंग उपस्थित हुआ।

संवत १९८४ के भादवा मास में देलवाडा के नजदीक आरणा में मैं श्री योगीराज के दर्शनार्थ गया । उस वक्त मेरे पास कोई धन्धा न होने से मैं बेकार था। आर्थिक स्थिति कमजोर होने से मैं बहुत ही कठिनाई में था । मैंने अपनी जन्मकुंडली श्री योगीराज को देकर भविष्य बताने की अर्ज की। तुरन्त ही श्री योगीराज ने एक केशरी सिंह की भाँति गर्जना करते हुए कहा कि, **"जिसके बाजू में स्वयं श्री भगवान हैं, उसको ग्रह क्या कर सकते हैं?"** यह सुनकर मैंने जन्मकुंडली फाड़ कर फेंक दी । जन्मकुंडली बताने का मेरा मोह बिल्कुल छूट गया । इस प्रसंग के दौरान श्री योगीराज ने मुझसे पूछा कि वह ब्राह्मण कौन था और किसके हाथ के डंडे की मार तूने खाई थी? यह सुनते हीं मैं आश्चर्य चकित रह गया । जो घटनाएँ घटित हुई थी, उन्हें विस्तृत -रुप से बताने की मेरी इच्छा हुई लेकिन श्री योगीराज ने कहने का मौका ही नहीं दिया । और मैं भी कुछ कहने की हिम्मत न जुटा सका । इस अवसर पर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि श्री योगीराज एक महाज्ञानी महापुरुष हैं।

अत्यधिक सीधे-सादे रुप से रहने के कारण और भोले-भाले चेहरे की वजह से इस विभूति को पहचानना अत्यन्त दुर्लभ है। मेरे तीन दिन के समागम में मैंने देखा कि श्री योगीराज के पास दिव्य महापुरुष आते थे, जिन्हें देखकर मुझे तत्काल ऐसा लगा कि ऐसे ही दिव्य महात्मा वेटापालम में ब्राह्मण भक्तराज के पास भी आते थे । मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि वे सब मनुष्य रुप में देवता थे। इसी प्रकार आरणा में पधारे हुए महापुरुषों के बारे में मेरी मान्यता दृढ़ हो गई । जब मैने श्री योगीराज से इस बारे में पूछा तो वे मौन रहे । लेकिन बाद में मेरे मुंबई आने के पश्चात् सेठ कानाजी, मेडा वालों ने मुझे बुलाकर श्री योगीराज के स्वयं के हस्ताक्षर से गुलाबी स्याही में लिखा हुआ ७ पृष्ठों का पत्र पढाया जिसमें **आरणा** स्थान पर उनकों परिपूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ, उसका महोत्सव देवताओं ने आनन्दपूर्वक अत्यन्त धूमधाम से मनाया, उसका प्रत्यक्ष और विस्तृत वर्णन था।

संवत १९८४ के आसोज सुदी के नवरात्री में मुझे मुंबई में श्री योगीराज के हस्ताक्षर का एक पत्र प्राप्त हुआ, जिसमें सिर्फ दो लाईन लिखी हुई थी, शुभ दिन शुभ चोघडिये में घर का धन्धा करने का मुहुर्त करो। इस पर मैंने संवत १९८४ को आसोद सुदी १० **(विजयादशमी)** के शुभ दिन मेरे पुत्र जितेन्द्रलाल और मेरे भाई चुन्नीलाल के नाम से **"जितेन्द्रकुमार चुन्नीलाल एण्ड कं."** के नाम से धन्धा शुरु किया। चोपडा पूजन करके श्री योगीराज का एनलार्जमेन्ट किया हुआ लंदन से आया हुआ फोटो टाँगकर "जय जय गुरुदेवा" की आरती की, उसी समय शुभ मुहुर्त पर दो महापुरुष **हरिदासजी और रामदासजी** महाराज मेनसन्स सेंडहर्स्ट रोड वाले मेरे मकान पर पधारे और मुख्य बैठक पर विराजमान हो गये, मानो वे खुद मालिक हो। उनकी आज्ञानुसार हम दोनों भाइयों ने श्रीराम शब्द ५०१ बार लिखा। इस प्रसंग पर मेरे घर का इतिहास महात्मा हरिदासजी द्वारा पूछे जाने पर महात्मा रामदासजी ने भूत, वर्तमान और भविष्य की संक्षिप्त रुपरेखा खींच दी तथा अनेक प्रकार की लीलायें की, जो अनुभवगम्य होने से यहाँ लिखने में असमर्थ हूँ । लेकिन उन्होंने जो बातें बताई वे आज पर्यन्त सत्य साबित हुई हैं । वे दोनों महापुरुष मनुष्य रुप में देव थे, इसमें मुझे लेश मात्र भी संदेह नहीं है।

श्री योगीराज की पूर्ण कृपा से हमारा काजू का धन्धा (अमेरिका एक्सपोर्ट का) बिना पूँजी के ही अच्छी तरह चलने लगा । वेटापालम के व्यापारी माल उधार देते थे और शिपमेंट होने के बाद हम पैसा वापस चुका देते थे। इसमें अच्छी कमाई हो जाती थी। अमरिका से दूसरा आर्डर आएगा, इस उम्मीद के साथ हमने रु ११०००/- का काजू पेटियों मे भर कर रख दिया लेकिन चार माह तक आर्डर न आने से उसमें जीव –जन्तु पड़ गये । दूसरी ओर लेनदार अपने पैसों का तकाजा करने लगे । इतने में अमेरिका से ऑर्डर आ गया । इज्जत बचाने के लिये जीव-जन्तु पड़े हुए काजू न्यूयार्क भेज दिये । सिर्फ आबरू बचाने के लिए ऐसा करना पड़ा और कोई चारा भी न था। कहीं न्यूयार्क में इज्जत न चली जाये,इस खातिर कुदरती प्रेरणा से मैंने अपनी ५ वर्षीय पुत्री के हाथों दृढ श्रद्धा के साथ सभी पेटियों पर "जय गुरुदेव" मंत्र का उच्चारण कर पानी के छींटे छंटवाये और माल न्यूयार्क रवाना कर दिया और लेनदारों का कर्जा चुकता कर दिया ।

मेरे प्रतिद्वंदी व्यापारी शंकर बालकृष्ण तोरण ने भी रु.३०,०००/- के जीव- जन्तु वाले काजू उसी स्टीमर से न्यूयार्क भेजे थे। स्टीमर न्यूयार्क पहुँचने के एक सप्ताह बाद व्यापारी शंकर बालकृष्ण को तार मिला कि समस्त माल सड़ गया है । उसे यहीं नष्ट कर दिया जाये या वापस हिन्दुस्तान भेजा जाये? व्यापारी शंकर बालकृष्ण को वह माल न्यूयार्क से कुछ मील दूर फिंकवाने के लिये रु. २५००/- अलग से देने पड़े ।

उपरोक्त समाचार जानकर मुझे अत्यन्त चिंता हुई, परन्तु गुरुकृपा से मेरी चिंता ४-५ दिन बाद दूर हो गई । स्टीमर पहुँचने के दस दिन के भीतर कायदानुसार क्लेम किया जा सकता है, ऐसी कांट्रेक्ट में शर्त थी।

स्टीमर पहुँचने के लगभग एक महीने पश्चात् खरीददार न्यूयार्क वाली पार्टी का पत्र आया। उसमें हमारी क्वालिटी की खूब प्रशंसा पढ़कर मैं आश्चर्य - चकित हो गया । इस अजब घटना से मुझे ऐसा महसूस हुआ कि किसी दैवी सत्ता ने गुरुकृपा से ही मेरी मझधार में डूबी नैया को पार लगाया है। इसमें मुझे लेशमात्र

भी संदहे नहीं है। मेरी दृढ़ श्रद्धा इस तरह फलीभूत हुई । इसके बाद गुरुकृपा से मेरा काजू का धंधा जोरों से चलने लगा । संवत १९८६ में मेरे छोटे भाई चुन्नीलाल को वेटापालम में काम संभला कर मैंने मुंबई में रहने का निश्चय किया, ताकि श्री योगीराज के दर्शन करने के लिए आबू आने-जाने में आसानी रहे।

संवत १९७८ से संवत १९८५ तक जब - जब मैं श्री योगीराज के दर्शन करने गया, तब-तब युक्ति पूर्वक एक-एक बात ऐसी खूबी से कहते थे, जिसका अर्थ परिणाम आने के बाद ही समझ में आता था। उपरोक्त ज्ञान कोई ज्योतिष-विद्या का ज्ञान न था, अपितु अद्भुत आत्मशक्ति, आत्मज्ञान ही था, ऐसा मेरा दृढ़ निश्चय है। इस प्रकार योगीराज के प्रति मेरा आकर्षण दिन - प्रतिदिन बढ़ता चला गया ।

संवत १९८६ के धन तेरस के दिन मुंबई में लक्ष्मी- पूजन करने के पश्चात् दीपावली और नये साल को श्री योगीराज के दर्शन करने हेतु आबू गया। उस समय मैने हिम्मत करके ब्राह्मण भक्तराज, जो गुरु गिरनारी के शिष्य थे, के साथ छः महिने में अनुभव की हुई बातें तथा गाडरवाडा वाले **"धूनीवाले दादाजी"** के सम्बन्ध में सब बातें श्री योगीराज से अर्ज की । साथ ही साथ उन संतों के दर्शन की इच्छा व्यक्त की। इसके जवाब में श्री योगीराज ने अपने श्रीमुख से फरमाया कि गाडरवाडा वाला संत है, लेकिन उसकी आवाज ब्रह्मांड तक नहीं पहुँचती और उस ब्राह्मण को मैंने ही तुम्हारे पास भेजा था। अब तुमको किसी के दर्शन के लिए जाने की आवश्यकता नहीं है । इस पर मुझे ऐसा आभास हुआ कि श्री योगीराज कोई महान् सर्वोपरी सत्ताधारी महापुरुष है ।

ठीक दीपावली के दिन सुबह १० बजे के करीब श्री योगीराज ने मुझे फरमाया कि बड़े साहब (A.G.G. TO RAJPUTANA) कल शाम माउंट आबू आये हैं । तुम अभी वहाँ जा कर यह सूत की माला उन्हें देकर मेरा आशीर्वाद कह आओ। रास्ते में किसी भी जगह एक मिनट भी रुकने की आवश्यकता नहीं है। अभी सीधे उनके बंगले चले जाओ। श्री योगीराज की आज्ञानुसार मैं जो कपड़े

पहनकर आया था, उसमें ही प्रस्थान कर गया । रास्ते में मुझे अनेक प्रकार के विचार आए। मेरे दिमाग में विचार आया कि बिना एपोइंटमेन्ट के राजपूताना के एजेन्ट टू गवर्नर जनरल से कैसे मिला जा सकता है? बड़े-बड़े राजा महाराजाओं को भी उनसे मिलने के लिये कई दिन पहले एपोइंटमेंट लेना पड़ता हैं ।

ये सब विचार करते- करते मैं ए.जी.जी. साहब के बंगले तक पहुँच गया। वहाँ उनके सचिव ने बताया कि बिना एपोइंटमेंट के तुम उनसे मिल नहीं सकते। मैंने समय की कमी को महसूस करते हुए कहा कि मुझे उनसे अपना कोई निजि काम नहीं है । मैं तो योगीराज श्री शांति विजय जी की तरफ से खास संदेश कहने आया हूँ । श्री योगीराज का नाम सुनते हीं सेक्रेटरी ने मुझे बैठने के लिए कुर्सी दी तथा कहा, **"इस चिट्ठीमे तुम्हारा नाम श्री योगीराज के शिष्य के रूप में लिखो, मैं तुमको अभी ए.जी.जी. साहब से मिलवाता हूँ, क्योंकि मैं खुद श्री योगीराज का शिष्य हूँ।"** यह बात चल ही रही थी कि इतने में ए.जी.जी. साहब खुद सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए दिखाई दिये, तब सेक्रेटरी ने मेरी चिट्ठी उनको दे दी। वह चिट्ठी पढ़कर साहब ने सम्मान पूर्वक मुझे रिसिव किया और खुद मुझे अपनी निजि ऑफिस तक ले गये । मैंने उन्हें श्री योगीराज का आशीर्वाद कहा और वह सूत की माला उन्हें दे दी। बड़े साहब कुर्सी के पास खड़े -खड़े मेरे साथ बातें करने लगे और श्री योगीराज के साथ मेरे अनुभवों के संबंध मे पूछा।

मैंने मेरे सड़े काजूओं को न्यूयार्क रवाना करने और वहाँ पर उनका अच्छी हालत में पहुँचने का सारा वृतान्त कहा । सिर्फ एक अनुभव बताने में हीं लगभग बीस मिनट लग गए। फिर मैंने ओगल्वी साहब (ए.जी.जी.) से पूछा कि आपका श्री योगीराज के साथ कोई अनुभव हो तो बताइये । जवाब में उन्होंने कहा कि पहले वे अमुक पद पर थे तब बीकानेर के महाराजा के कहने से वे श्री योगीराज के दर्शन करने के लिए देलवाड़ा गए थे। उस समय श्री योगीराज ने फरमाया कि अब तुम्हारी नियुक्ति राजपूताना के ए.जी.जी. के पद पर होगी । उस समय योगीराज के दर्शन करने के बाद ही ऑफिस का चार्ज लेना। यह बात भूल मत जाना, ऐसा डायरी में लिखवाया था। अमुक पद से इतने बड़े पद पर आना

असंभव था, लेकिन वह संभव बन गया । मैं ऑफिस का चार्ज लेने के लिए कल शाम ही आया हूँ लेकिन श्री योगीराज द्वारा कही गयी बात भूल गया । अब आपने सही समय पर आकर वह तीन साल पहले की बात याद करा दी । अब मैं श्री योगीराज के दर्शन के बाद ही ऑफिस का चार्ज लूँगा । इसीलिए मैं अभी तक कुर्सी पर बैठा नहीं और आपसे खड़े- खड़े ही बातें की। कृपया आप मुझे आज ही श्री योगीराज से मिलने का एपोइंटमेंट दिलवा दीजिए।

मैंने वहाँ से वापस आकर श्री योगीराज से तमाम बातें कही । उन्होंने उसी दिन शाम को ४ बजे ओगल्वी साहब से मिलने का समय दिया था। ओगल्वी साहब निश्चित समय पर सपरिवार श्री योगीराज के दर्शन करने के लिए देलवाडा आए और बाद में हीं ए.जी.जी. पद का चार्ज लिया था। इस प्रसंग से मेरी श्रद्धा में वृद्धि हुई।

दूसरे दिन संवत १९८७ के कार्तिक सुदी १को, नए साल के दिन मैंने श्री योगीराज से मुम्बई जाने की आज्ञा माँगी, लेकिन उन्होंने ठहरने के लिए कहा । मैने फिर से अर्ज कि, कि यदि मैं कल मुम्बई न पहुँचा तो मेरे उपर की हुंडी बैंक में पड़ी रह जायेगी तथा आबरु चली जाएगी । क्योंकि अमेरिका भेजे काजू के डॉक्युमेन्ट जो मद्रास से रजीस्टर्ड पोस्ट से रवाना हो चुके थे, उनको उसी दिन बटा कर वो पैसे बैंक में हुंडी के लिए भरना है । लेकिन श्री योगीराज ने फरमाया कि, **"शरीर का दिवाला निकलेगा, आत्मा का नहीं।"**

आज्ञा नहीं मिलने से मैंने रुकने का निश्चय कर लिया। मैं अपने कमरे में जाकर चिंतायुक्त स्थिति में सो गया । आँखों से टप-टप आँसू गिरने से पूरा तकिया गीला हो गया। खाना-पीना-सोना कुछ भी सूझ नहीं रहा था । ऐसी स्थिति में लगभग डेढ़ घंटा व्यतीत हो गया । इतने में श्री योगीराज ने मुझे बुलाया और जाने की आज्ञा दे दी।

मैं **"जय जय गुरुदेवा"** वाली आरती (जो कि ब्राह्मण भक्तराज ने हस्तालिखित पुस्तक में प्रथम पेज पर मेरे लिए रची थी) बोलकर विदा होना

चाहता था लेकिन श्री योगीराज ने फरमाया कि आरती बोलने जितना समय नहीं है। अभी रवाना हो जाओ तो तुम्हें आबूरोड जाने वाली सर्विस बस मिल जाएगी । जवाब में मैने कहा कि अगर बस नहीं मिली (जो मिलने की आशा भी नहीं थी क्योंकि समय काफी हो चुका था) तो मैं चार सीट वाली स्पेशल कार करके चला जाऊँगा और आबूरोड से मेल पकड़ लूँगा । श्री योगीराज ने फरमाया कि बिना विलम्ब किए चले जाओ तो सर्विस बस मिल जाएगी और स्पेशल कार मिलने वाली नहीं है। मैंने तुरन्त अपना बिस्तर कुली से उठवाया और चल पड़ा । माऊंट आबू बस स्टेंड पहुँचने में मुझे आधा घंटा लगा । सर्विस बस के मैनेजर ने कहा कि तुम सिर्फ तीन मिनट देर से पहुँचे , वरना बस मिल जाती । मैंने कहा कि अधिक किराया देने के लिए तैयार हूँ, मुझे स्पेशल कार दे दो। मैनेजर ने कहा कि तमाम बसें और कारें एक रजवाडे के लिए बुक हो चुकी है और आबूरोड भेज दी गई है। आप चाहे जितना पैसा खरचो लेकिन मेरे पास कोई साधन नहीं है । मेरे साथ वलसाड़ वाले उजमशी भाई थे । मैनेजर की बात सुनकर मैं लगभग बेहोश जैसा हो गया । मन में तर्क-वितर्क चल रहे थे। श्री योगीराज के शब्द तुम्हें सर्विस बस मिल जाएगी गलत साबित हुए । शायद मेरे द्वारा आने में विलम्ब हुआ, उसका ही यह परिणाम है । मैं विचारों में खोया हुआ था। इतने में क्या देखता हूँ, कि थोड़ी देर पहले गई हुई बस करीब तीन मील जाकर वापिस लौट आई। उस बस में मैनेजर का परिवार था। बस में मैनेजर सांहब की बहू ने कहा कि पालनपुर ले जाने के लिए ब्राह्मी के पत्तों की पोटली यहाँ भूल गए थे, इसलिए बस वापस आई है। मैनेजर ने उस बस में मुझे बैठाया और आबूरोड के लिए रवाना कर दिया । तब मेरे हर्ष का कोई पार न रहा, यह सोचकर कि बस मेरे लिए ही वापस आई है । श्री योगीराज के वचन सत्य सिद्ध हुए । दूसरे दिन मुम्बई पहुँच कर डॉक्युमेन्ट और हुंडी भरपाई करने के सब काम सुचारु रुप से परिपूर्ण कर दिये ।

मेरा अनुमान है कि उपरोक्त घटना मेरे प्रेम और श्रद्धा की कसौटी थी, जो गुरुदेव ने युक्तिपूर्वक की थी। मुंबई आने के बाद मेरी लगन श्री योगीराज के प्रति और बढ़ गई। करीब डेढ़ महिने पश्चात १९३० में दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में जब मैं देलवाडा आया, तब सख्त ठंडी थी और यात्रियों की भीड़ भी कम थी। इस बार मुझे सदैव १२-१४ घंटे श्री योगीराज के सान्निध्य में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। रात्री के समय योगीराज के समीप ही ध्यान करता था और अजब तरह के दृश्य निहारता था। योगीराज कई बार महापुरुषों के अनेक दृष्टांतों को समझा कर अध्यात्मिक ज्ञान की अपूर्व बातें बताते थे। गुरुदेव फरमाते थे कि अब हिंदुस्तान का उदय होने वाला है । DAWN अर्थात् भोर हो चुकी है। सन् १९४५ में हिन्दुस्तान को स्वराज्य प्राप्त होगा । यह समाचार उन्होंने बड़ौदा के एक गुजराती पत्र में एक भोजक के नाम से प्रकाशित करवाया था। उस पत्र को मैंने भी पढ़ा था। (सन् १९४५ में पार्लियामेंट में एटली सरकार द्वारा घोषित किया गया और तदनुसार १९४७ में स्वराज्य प्राप्त हुआ)

इस अवसर पर मैंने एक तार **"आनन्द भवन"**, कांग्रेस हाऊस, इलाहाबाद के पते पर भेजा जिसमें श्री योगीराज के कथानुसार यह सूचित किया गया था कि समस्त राजद्वारी कैदी ता. : ३-३-१९३१ को मुक्त कर दिये जाएंगे। इसके बाद श्री योगीराज ज्यादातर गुरु गुफा (माउंट आबू से करीब एक मील दूर) में रहते थे। सूर्योदय तक मैं भी उनके साथ रहता था। जनवरी १९३१ में मेरे से गुजराती भाषा में एक लेख तैयार करवाया जिसमें लिखा था- ३-३-१९३१ लंदन टाइम के अनुसार इतने बज कर इतने मिनट पर सारे कैदी छूट जाएंगे तथा १४ मुद्दों पर महात्मा गांधी तथा इरविन के बीच शांतिपूर्व समाधान हो जायेगा। यह समाधन कोई भविष्य वाणी नहीं, अपितु श्री योगीराज के द्वारा किया हुआ दृढ़ संकल्प है; जो अवश्य फलीभूत होगा । इस प्रकार का लेख तैयार करवा कर रख दिया । लेकिन अखबार में श्री योगीराज की आज्ञा मिलने के बाद ही प्रकाशित करवाया जाय, ऐसा फरमाया ।

ता. २३-३-१९३१ के आसपास जब मैं मुम्बई जा रहा था, तब मुझे आज्ञा मिली कि लंदन टाइम के घंटे – मिनट उपरोक्त लेख में प्रकाशित नहीं कराए जाये। शेष लेख ज्यों का त्यों अंग्रेजी व गुजराती पत्रों में प्रकाशित करा दिया जाय । जिसकी एक प्रतिलिपी महात्मा गांधी को, एक लोर्ड इरविन के निजी सचिव को तथा एक प्रतिलिपी बीकानेर के महाराजा को एक सप्ताह पहले पोस्ट से भेजने का आदेश दिया । उसके अनुसार मैंने २३-२-३१ तथा २६-२-३१ के समाचार पत्रों में प्रकाशित करवा दिया। श्री योगीराज के संकल्प के अनुसार महात्मा गांधी और लार्ड इरविन के बीच समझौता हुआ था तथा कैदियों को मुक्त करने की घोषणा हुई थी, जिसके समाचार सबसे पहले ता.: ४-३-१९३१ के इवनिंग न्यूज पत्र में प्रकट हुए थे।

इसी समय एक बार श्री योगीराज आबू पर्वत की वनस्पतियों के गुण- दोष का वर्णन कर रहे थे। उन्होंने एक ऐसी बात का बोध कराया कि अचलगढ़ के पास रेवती कुंड के पानी में कई वनस्पतियों का सत है और उस पानी से कई प्रकार के असाध्य रोग दूर हो जाते हैं । तत्क्षण मुझे ऐसी प्रेरणा हुई कि मेरी छाती (हृदय) पर बड़ी सूजन थी और इसका इलाज डॉक्टर मुलगांवकर से मुम्बई में करवाया था। डॉक्टर ने जाँच करके कहा था कि **"कैंसर"** है जिसका आपरेशन सिर्फ लंदन में हीं हो सकता है। उसमें भी १०० में से ५ व्यक्ति ठीक होते हैं । मैंने रोग को असाध्य समझ लिया था, लेकिन अब रेवती कुंड के पानी से इलाज करने का निश्चय किया । जनवरी मास के अंत में जब श्री योगीराज अचलगढ़ पधारे तब मैं भी उनके साथ अचलगढ़ गया । सख्त ठंडी के मौसम में भी मैं रोज २-३ लोटे पानी सूजन पर छांटने लगा । तीन सप्ताह बाद सूजन कम हो गई और असाध्य रोग एकदम ठीक हो गया । श्री योगीराज के वचन से मुझे जीवनदान मिला ।

उसी अरसे में मुझे एक दूसरा चमत्कारिक अनुभव हुआ। देलवाड़ा में देर रात्री में श्री योगीराज के ध्यान में बैठने के बाद मैं अपने कमरे में आकर सो गया। प्रातःकाल जब मैं घोर निन्द्रा में था तब श्री योगीराज मेरे कमरे में पधारे और मेरे चारों ओर चक्कर काटने लगे । अचानक उनका पैर मेरे पैर से लग गया और मैं

जाग गया । श्री योगीराज ने फरमाया कि वो नजदीक के जंगल में ध्यान करने जा रहे हैं, अतः मैं भी उनके साथ गया। कन्याकुमारी के पास एक डुंगर पर मुझे बैठा दिया । करीब डेढ़ घंडे बाद सात बजे के आसपास श्री योगीराज मेरे पास पधारे और फरमाया कि वस्तुपाल तेजपाल तथा विमलशा सेठ, जिन्होंने देलवाडा के भव्य मन्दिरों के निर्माण में प्रमाणित द्रव्य खर्च किया, वह महापुरुषों द्वारा दी गई जड़ी- बूटी रूपी प्रसादी का फल है । ऐसा कह कर उन्होंने मुझे चित्रावेल जैसी वस्तु देकर सूचित किया कि इस चित्रावेल के प्रताप से खूब द्रव्य प्राप्त कर परमार्थ के काम करना । मैंने श्री योगीराज की आज्ञानुसार उस चित्रावेल जैसी वस्तु को ग्रहण किया। तत्पश्चात श्री योगीराज एक शिला के ऊपर ध्यान में बैठ गए। उस समय मैंने उस चित्रावेल को एक तरफ गहरी खाई में फेंक दिया, यह सोचकर कि निष्काम सेवा भक्ति करने वाले को महापुरुष से कुछ भी याचना व इच्छा नहीं रखनी चाहिए। इस बाबत मुझे श्री योगीराज द्वारा दिये गए अनेक दृष्टान्तों का स्मरण हो आया। इसलिए मैंने वह चित्रावेल जैसी वस्तु फेंक दी। कुछ मिनट बाद श्री योगीराज ने मुझे जाने की आज्ञा दी और स्वयं ध्यान में बिराज गए।

कन्याकुमारी से देलवाड़ा सिर्फ पांच मिनट का रास्ता है। मैं तुरन्त देलवाड़ा आया और श्री योगीराज को उनके कमरें में व्याख्यान देते हुए पाकर आश्चर्य में डूब गया । मैं भी व्याख्यान सुनने बैठ गया । पांच मिनट बाद व्याख्यान समाप्त हुआ और श्री योगीराज ने फरमाया -अवसर देखो। तुरन्त ही सब श्रोतागण हाल से निकल गए । मैं भी हाल से बाहर आया और कुछ श्रोताजनों से पूछा कि श्री योगीराज कितने समय से व्याख्यान दे रहे हैं? उन्होंने बताया कि करीब आधे घंटे से । यह सुनकर मेरे अचरज का पार न रहा । मैं मन ही मन में सोचने लगा कि पांच मिनट पहले तो मैं श्री योगीराज को कन्याकुमारी की शिला पर ध्यान में बैठा हुआ देखकर आया हूँ और यहाँ पर देलवाड़ा में आप आधे घंटे से व्याख्यान दे रहे हैं। यह कैसे संभव है ? थोड़ी देर बाद मैंने श्री योगीराज से यह आश्चर्यजनक बात कही । उन्होंने प्रत्युत्तर में कहा **"तू पागल हो गया है"** और बात उड़ा दी। लेकिन इस घटना से मुझे पूर्ण रुप से विश्वास हो गया कि महापुरुष एक ही समय में अनेक स्थानों पर पहुँच सकते हैं - यह शास्त्रों में लिखी हुई बात सत्य है।

ता.: २३-२-१९३१ के आसपास मैं बम्बई गया और गांधी इरविन समझौते वाला लेख समाचार पत्रों में छपवाया । ता. ३-३-१९३१ के मुंबई समाचार पत्र में मोटे अक्षरों में मैने पढ़ा कि गांधी इरविन बातचीत असफल हो गई है। तुरन्त ही मित्रों व परिचितों के टेलिफोन पर टेलीफोन आने लगे कि तुम्हारी छपाई हुई भविष्यवाणी असत्य हो गई है । मैनें उपरोक्त लेख के नीचे इस प्रकार लिखा था:---

"उपरोक्त लेख भेजने वाला इस जगत के महान् से महान् योगीराज को साकार पवित्र परमात्मा के रुप में दृढ़तापूर्वक मानने वाला उनका शिष्य -दासानुदास चंपकलाल जवेरचंद।"

इस प्रकार लिखने में मेरे हृदय की इच्छा यही थी कि जिज्ञासु भाई- बहन ऐसे महापुरुष के सत्-समागम में आवे और सभी का कल्याण हो।

तारीख ३-३-१९३१ को गांधी – इरविन समझोते के निराशा जनक समाचार पढ़कर मैं शाम को रवाना होकर देलवाड़ा गया और श्री योगीराज को सूचित किया कि लेख में की गई भविष्यवाणी गलत हो जाने से लोग मेरी हंसी उड़ाते हैं । इसलिए घबराकर मैं आपके पास आया हूँ। श्री योगीराज मुस्कराये और मौन रहे । ता. : ५-३-१९३१ को शाम ४ बजे माऊँट आबू से कोई भक्त ता. ४-०३-१९३१ को प्रकाशित इवनिंग न्यूज समाचार पत्र लेकर श्री योगीराज के पास देलवाडा आया और कहने लगा कि आपकी भविष्यवाणी पूर्ण सत्य सिद्ध हुई है। तमाम राजद्वारी कैदियों को मुक्त करने का पेपर में छपा है और गांधी इरविन की बातचीत सफल हुई है। यह समाचार सुनकर मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। लंदन स्थित भारत के प्रधान और लोर्ड इरविन के बीच समाधान करने हेतु बातचीत ३-३-१९३१ को ही हो गई थी, ऐसी मेरी मान्यता है।

उपर का लेख प्रसिद्ध होने के थोड़े दिन बाद ब्रिटिश सरकार की तरफ से सी.आई. डी. के बड़े अफसर खानगी तपास करने के लिए देलवाड़ा आए थे। उस वक्त श्री योगीराज व्याख्यान दे रहे थे। हॉल श्रोतागणों से भरा हुआ था । श्री योगीराज ने सी.आई. डी. अफसर को परमभक्त के रुप में सम्बोधित किया और प्रेमपूर्वक बुलाकर सबसे आगे अपने पास बैठाया । व्याख्यान सम्पूर्ण होने पर सब

श्रोताओं के चले जाने के बाद एकान्त में श्री योगीराज ने उस अफसर महोदय से कहा कि **"चूहा प्राण से बचे और बिल्ली पाप से बचे ऐसा उनका संकल्प था।"** अर्थात् ब्रिटीश सरकार और हिन्दुस्तान दोनों के प्रति उनका समभाव था। इतने शब्दों में ही सी.आई.डी. के अफसर महोदय समझ गये कि ये योगीराज तो कोई समर्थ ज्ञानी पुरुष है, न कि (पोलिटीकल) राजद्वारी व्यक्ति । आये हुए व्यक्ति सी.आई.डी. के बड़े अफसर थे, ऐसा मुझे श्री योगीराज के कथन से ज्ञात हुआ।

इसी समय के दौरान श्री योगीराज ने ऐसी इच्छा व्यक्त की कि आबू, देलवाड़ा तीर्थ में भगवान के दर्शन के लिए आने वालों को जो मुडका टैक्स सिरोही स्टेट को भरना पड़ता है, वह बिल्कुल बन्द होना जरुरी है। इस परमार्थ कार्य के लिए रु. ८०००/- किसी युक्तिपूर्वक योजना में मेरे पास से खर्च करवाये थे। किसी और व्यक्ति से रु. ११०००/- खर्च करने के लिये मिले, जिसे मैंने तीन बार गिनकर लिए, लेकिन बाद में वो गिनने पर रु. १२०००/- हो गये । इस प्रकार कुल रकम रु. २००००/- ता. १-४-१९३१ के दिन खर्च की गई, जिसकी विगत अव्यक्त है। (विदित हो कि यह मुड़का टैक्स संवत २००१ से बिल्कुल बंद कर दिया गया और इस प्रकार श्री योगीराज द्वारा किया गया संकल्प फलीभूत हुआ।)

श्री योगीराज कई अग्नि परीक्षा रुपी कसौटी पर मुझे कस रहे थे और मेरे जीवन को गढ़ रहे थे। उनकी कृपा से ही मैं उन्हें थोड़ा-बहुत पहचान सका था और एक पागल भक्ति जैसी स्थिति में हरदम मस्त-आनंदित रहता था।

संवत १९८७ सन् १९३१ के मार्च अप्रेल में श्री योगीराज आबूरोड जैन धर्मशाला में पधारे थे। गांधी इरविन पेक्ट वाले लेख के कारण हजारों की तादाद में लोग आबूरोड आने लगे। मैं भी आबूरोड आकर श्री योगीराज की सेवा में रहा था। रात्री के समय श्री योगीराज मुझे आनंदघनजी आदि महापुरुषों तथा उनके भक्तों की अध्यात्मिक ज्ञान की अपूर्व बातें सुनाते थे। एक समय रात के लगभग १२ बजे श्री योगीराज ने मुझसे पूछा कि बंडी (बनियान) की जेब में कुछ जोखम है क्या? मैंने कहा कि १२०००/-के नोट लेकर दो दिन के लिये आपके दर्शनार्थ आया था, लेकिन आपने मुझे रोक लिया, इसलिए वह रकम मेरे पास ही है।

मुंबई मे मेरा व्यापार और व्यवहार देखने वाला कोई नहीं है, लेकिन आप श्री जब मुझे आज्ञा देंगे, तभी जाऊँगा। धंधा या आबरु का क्या होगा इसकी मुझे कोई फिकर नहीं है। श्री योगीराज ने मुझे आज्ञा दी कि वह नोंटों का बंडल नीचे फेंक दे। हुक्म होते ही मैंने वह नोटों का बंडल नीचे रास्ते में फेंक दिया । इसके बाद श्री योगीराज ने मुझे सो जाने के लिये कहा और मैं निश्चिंत होकर निंद्राधीन हो गया। इसी समय मेरे भाई चुन्नीलाल ने वेटापालम से मुम्बई की दुकान को व्यापार और रकम के लिये कई तार भेजे लेकिन कोई जवाब न मिलने से वह मुम्बई आये और वहाँ से आबूरोड । यहाँ पर उसे पता चला कि श्री योगीराज उसी दिन तीन मील दूर ऋषिकेष पधार गये हैं, अतः वह सीधे वहाँ पहुँचे । जब मैं दोपहर को ऋषिकेष गया, तब मैंने वहाँ पर मेरे भाई चुन्नीलाल को देखा । श्री योगीराज ने मेरे भाई से कहा कि चंपकलाल का मगज ठिकाने नहीं होने से उसने आज से तीन सप्ताह पूर्व रु. १२०००/- के नोंटों का बंडल बाल्कनी से रास्ते पर फेंक दिया था। बाद में वह बंडल धूलिया नामक सेवक से मंगवा कर उसकी बंडी में दवा की पुड़िया के रुप में सुरिक्षत रखवा लिया था। उस पुड़िया को बंडी की जेब में सुई-धागे से अच्छी तरह सिलवा कर रखा था। धूलिया को बुलाकर बंडी में से वह पुड़िया निकलवा कर रु. १२०००/- अच्छी तरह गिनवाकर मेरे भाई को सुपुर्द कर दिये।

मेरी मूर्खता की बातें सुनकर मेरे भाई रोने लगे । मैं भी उस समय मौन रहा । श्री योगीराज ने मेरे भाई को शान्त करके ऐसा आशीर्वाद दिया – तुम दोनों भाईयों का प्रेम राम-लक्ष्मण जैसा नहीं किन्तु राम-भरत जैसा रहेगा । बाद में हम दोनों भाइयों को साथ ही मुंबई जाने की आज्ञा मिल गई और हम दोनों भाई मुंबई चले गये । वहाँ से मेरे भाई वेटापालम गये और जाते हुए मुझे व्यापार की ओर अधिक ध्यान देने के लिये कह गये । लेकिन मेरा चित्त श्री योगीराज की तरफ ही होने से थोड़े ही दिनों में मैं वापस आबूरोड पहुँच गया।वहाँ पर मैं ब्राह्मण भक्तराज द्वारा रचित **"जय जय गुरुदेवा"** वाली आरती श्री योगीराज के समीप बोलता था जो कुछ लोंगों को रुचिकर नहीं लगती थी, लेकिन गुरुदेव मुझे पागल बतलाकर सबको शांत करते थे।

इन दिनों जैन कॉन्फेरेंस के सभापति श्री गुलाबचंदजी ढढा तथा सिरोही-आबूरोड के वकील लोग श्री योगीराज के दर्शनार्थ आये तब श्री योगीराज ने धूलिया को मुझे बुलाने भेजा । उस समय मैं दाढी कर रहा था । अभी आधी ही दाढी बनी थी कि गुरुदेव के बुलावे के कारण मैं तुरन्त भागकर श्री योगीराज के पास पहुँच गया । श्री ढढाजी और वकीलों को मुझे देखकर आश्चर्य हुआ, जिससे मैंने उन्हें कहा कि श्री ऋषभदेव भगवान ने कहा है – "आणाय धम्मो, आणाय तव्वो" अर्थात् महापुरुषों की आज्ञा का पालन करना ही धर्म है और वही सच्ची तपस्या है और इसी से मोक्ष की प्राप्ति होती है ।

इस वक्त भी श्री योगीराज ने मुझे पागल कहकर संबोधित किया था । तत्पश्चात श्री योगीराज को ढढाजी ने " THE POWER OF INDIA" नामक पुस्तक दिखाई । यह पुस्तक मिस माइकल पीम ने लिखी थी, जो न्यूयार्क में "ट्रिब्यून हेरोल्ड" नामक पत्र की संपादिका थी । इस पुस्तक के पहले पृष्ठ पर श्री योगीराज का फोटू था और श्री योगीराज के साथ उनके सत्-समागम के अनुभवों में से एक अजब बात श्री ढढाजी ने पढकर सुनाई, वह इस प्रकार है:-

मैं जंगलों व गुफा में श्री योगीराज के साथ बातें करती उतने में श्री योगीराज अदृश्य हो जाते और में गुरुजी-गुरुजी पुकारती तब वापस प्रकट हो जाते थे, and yet.... इतना लिखकर उस वाक्य को अधूरा छोड दिया। इसका अर्थ यह हुआ कि जिसको इससे ज्यादा जानने की जिज्ञासा हो, उसे मुझे रुबरु में पूछना चाहिए । यह पुस्तक पढ़कर मुझे अत्यंत हर्ष हुआ और बाद में मैंने यह पुस्तक बम्बई में खरीद कर पढ़ी थी । इस पुस्तक में ऐसा वर्णन था कि भारत एक उच्च कोटि का देश है । मिस माइकल पीम तीन-चार महिने तक आबू के पहाडों और जंगलों में श्री योगीराज के सत् - समागम में आई थी ।

विदा होते समय उसने कहा था कि मिस मेयो ने मदर इंडिया नामक पुस्तक लिखकर हिन्दुस्थान को नीचा दिखाने का जो प्रयत्न किया है, इसका जबाब मैं न्यूर्याक जाकर एक पुस्तक द्वारा दूंगी । पुस्तक का नाम "THE POWER OF INDIA" रखने का प्रयोजन यह है कि श्री योगीराज हिन्दुस्तान की एक महान् शक्ति है, ऐसा उसके अनुभव से ज्ञात होता है।

इसी अरसे में श्री योगीराज ने मुझे अचानक फरमाया कि तेरे नाम से पोकरण के ठाकुर साहब श्री चैनसिंहजी को माऊंट आबू तार देकर उन्हें शीघ्रता से आबूरोड आने का लिख।

मैंने इस मुताबिक तार कर दिया । इसका जबाब आया कि तुम मुझे मिलने माऊंट आबू आ जाओ। वापिस इस तार का जबाब मैंने श्री योगीराज के फरमान अनुसार इस प्रकार दिया- गुरुदेव का हुकम है कि आप जल्दी आबूरोड आओ। वह तार पाकर पोकरण के ठाकुर साहब शाम को करीब चार बजे आबूरोड आये । उस समय श्री योगीराज दरवाजे बंद कर ध्यान में बिराजे हुए थे और मैं बाहर था । थोडी देर बाद श्री योगीराज ने दरवाजा खोलकर हम दोनों को अंदर बुलाया । श्री योगीराज ने पोकरण ठाकुर साहब को मेरी पहचान इन शब्दों में दी "यह चंपकलाल मेरा भक्त है, अभी इसकी हालत चनाकुरमरा खाकर फुटपाथ पर सोने जैसी है । इसलिये इसको तुरन्त रु. २५०००/- की मदद करो।" यह सुनकर मैं स्तब्ध होकर मौन रहा । पोकरण ठाकुर साहब ने श्री योगीराज के वचन को मान्य करके कहा कि दो घंटे में अपने सेक्रेटरी के साथ कार से पांच-पांच हजार के पांच सरकारी बाँड भेजता हूँ । ये बाँड बेचकर रु. २५०००/- रकम काम में ले सकते हैं। शीघ्र ही उन्होंने पच्चीस हजार रुपये के बाँड ब्लेंक एंडोर्स करके भेज दिये ।

पोकरण ठाकुर साहब के जाने के बाद मैंने श्री योगीराज से नम्रता पूर्वक अ़र्ज की कि मुझे एक पाई भी नहीं लेनी है । परन्तु आपश्री ने मुझे दबाब पूर्वक कहा कि गुरु आज्ञा है । यह रकम मुझे स्वीकार करनी पडेगी । तत्पश्चात मुझे बम्बई जाने की आज्ञा देकर फरमाया कि तेरी इच्छा बाँड्स को बेचकर उपयोग में लेने की नहीं है तो खुशी से बाँड्स को तिजोरी में संभाल कर रख देना । अगर जरुरत पडे तो खुशी से बाँड्स को बेचकर रुपया उपयोग में लेने की तुझको छूट है। मैंने बम्बई जाकर बाँड्स को सुरक्षित तिजोरी में रख दिया । इस दौरान मैं कई बार बम्बई से आबूरोड आता जाता रहा ।

इतने में अचानक मुझे वेटापालम से मेरे भाई का तार मिला कि सर्राफ आत्मकोरी अपने उधार दिये हुए चालीस हजार रुपये शीघ्र वापस देने की लिए तकाजा कर रहा है । इस प्रसंग पर तीन माह पहले जो बाँड्स श्री योगीराज ने मुझे दिलाये थे, उसका ध्येय मुझे समझ में आया । मैंने तुरन्त वेटापालम तार कर दिया कि सर्राफ आत्मकोरी को चालीस हजार की हुंडी लिख कर दे दो। उसके साथ सब व्यवहार बंद कर दो और उससे कहो कि आगे से वह हमारे दरवाजे पर पैर न रखे । उस समय पन्द्रह हजार रुपये न्यूर्याक के शिपमेंट के आने वाले थे और पच्चीस हजार के बाँड घर में थे । मेरे भाई ने जब सर्राफ आत्मकोरी को मेरा तार दिखाया तो उसने घबरा कर मेरे भाई के पैर पकड कर माफी मांगी और विनती की कि दूसरों

के सिखाने से उसने तकाजा किया था, किंतु अब चंपकलाल को तार करके मेरा खाता चालू रखो । मैंने हर साल तुमसे रु. ५०००/- कमीशन के रुप में कमाये हैं । कृपया वह कमाई चालू रखो । भविष्य में कभी तकाजा नहीं करुंगा और हमें चालीस हजार का उधार हमेशा कायम रखेगा उसका वचन दिया ।

दूसरे दिन मुझे उपरोक्त आशय का तार मिला । जबाब में मैंने सर्राफ का खाता चालू रखने के लिये अपने भाई को सूचित किया । उसी दिन बाँड्स वापस पोकरण ठाकुर साहब को लौटाने के लिये मैंने आबूरोड की ओर प्रस्थान किया । उस समय श्री योगीराज वहाँ से पांच मील दूर शांति आश्रम में बिराजे हुए थे । वहाँ जाकर मैंने श्री योगीराज से उपरोक्त हकीकत बयान की और बाँड्स वापस दिलाने की विनती की । पत्र लिखकर मैंने पोकरण ठाकुर साहब को शांति-आश्रम बुलवाया । वो तुरन्त आये । मैंने पच्चीस हजार रुपये के वो बिना भुनाये हुए बाँड्स उन्हे वापस लौटा दिये । पोकरण ठाकुर साहब ने भी गुरु आज्ञा है ऐसा श्री गुरुदेव के द्वारा दबाब पूर्वक कहने के कारण ही वो बाँड्स वापस लिये । बाद मे मैंने जब इस प्रकरण की सत्य हकीकत से ठाकुर साहब को अवगत कराया तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ।

मुझे लगता है कि इस घटना में रकम देने वाले और लेने वाले दोंनो भक्तों की परीक्षा के साथ ही साथ तीन माह बाद मेरी इज्जत लेने के लिये तकाजा होने वाला है, यह जानकर ही श्री योगीराज ने यह व्यूह रचना की थी ।

सन १९३१ (सवंत १९८६) की गुरु-पूर्णिमा (असाड़ सुद १५) स्वयं श्री योगाराज द्वारा खूब धामधूम से मनाई गई । उस समय मैं देलवाडा में ही था । दादागुरु श्री धर्मविजयजी के पगलिये एक पालकी में विराजमान कर देलवाडा से माऊंट आबू, लिंबडी ठाकुर साहब द्वारा बंधवाये गये गुरुआश्रम तक वरघोडा निकाला गया । छोटे-बडे १८ रजवाडे तथा दूसरे गुरुभक्त वगैरह लगभग १००० लोग एकत्रित हुए थे । खूब ठाट-पाट से महोत्सव मनाया गया । मिठाई, श्रीफल और सूखे मेवे की प्रभावना की गई । इस प्रसंग पर श्री योगीराज ने मुझसे दादागुरु श्री धर्मविजयजी का जीवन-चरित्र लिखवाया, जिसे मैंने सभा के समक्ष पढ़ कर सुनाया था ।

बाद में राजा रजवाडों को फूल माला पहनाते हुए जोधपुर माँजी साहिबा की दासिओं के हाथ की कोहनियां मुझे तीन बार अचानक लग जाने से मुझमें किसी दैविक शक्ति का प्रवेश

हुआ, और मैंने उनपर प्रचण्ड क्रोध से गर्जना की । इससे तमाम दासियाँ सभा छोडकर चली गई । श्री योगीराज द्वारा मुझे शांत कराये जाने पर मैं तुरंन्त शांत हो गया । शाम को मैंने लिंबडी ठाकुर साहब और मिस शार्प से सुना कि दासियों द्वारा कान भरने से माँजी साहिबा ने अपने सिपाहियों को चंपकलाल को गोली से मार देने का आदेश दिया है । किन्तु आबू अंग्रेजों के राज्य में होने से कहीं मुसीबत खडी न हो जाये, इसलिये उन्होंने अपना आदेश वापस ले लिया ।

श्री योगीराज को यह बात मैंने शाम को ६ बजे देलवाडे में कही । श्री योगीराज ने फरमाया कि तू अभी जोधपुर माँजी साहिबा के पास जा और वहाँ जाकर निडरता से जैसा तुझे उचित लगे वैसा ठपका देकर वापस देलवाडा आ । मैं माँजी साहिबा के भाई मोहन सिंहजी से मिला। उन्होंने मुझे बहुत ही मान देकर आने का कारण पूछा । मैंने सब हकीकत कह कर माँजी साहिबा से मिलने की इच्छा व्यक्त की । मोहन सिंहजी ने उपर जाकर राज्य के रीति-रिवाज के अनुसार योग्य व्यवस्था कर दी । दरवाजे पर चिक का परदा डालकर माँजी साहिबा दासियों सहित बैठी थी ।

मैंने बिती हुई घटना संबंधी सत्य हकीकत कह कर सुनाई और कहा कि आपको मुझे गोली से मारना हो तो आपके बंगले में मैं खुद हाजिर हूँ । बाद में उन्हे पश्चाताप होने से मैंने गुरुभक्ति के संबंध में सत्संग की बातें की । मैंने उनसे स्पष्ट कहा कि उनकी पुत्री किशोर कुंवरी (जयपुर की रानी) के विषय में जब डॉक्टरों ने आशा छोड दी थी, श्री योगीराज के आशीर्वाद से ही जीवन दान मिला । उस समय जो गुरुभक्ति थी उसमें अब शिथिलता आ गई है । चाहे जितनी विकट परिस्थिति आ जाए, लेकिन श्रद्धा और भक्ति में दृढतापूर्वक मक्कम रहना चाहिये । ऐसा कह कर मैं वापस आ गया ।

सन १९३२ (सवंत १९८९) के फागुन या चैत्र मास में मैं देलवाडा गया । उस समय कलकत्ता वाले श्री आनंदचंदजी सिपानी वहाँ पर थे । वे गुरुभक्ति में तल्लीन होकर अनेक चमत्कारिक अनुभवों की बातें करते थे । उस समय माऊंट आबू में एक एनिमल होस्पिटल बनाने की शुरुआत उनके हाथों से हुई थी । कर्नल ओगील्वी (A.G.G. to Rajputana) की सिफारिश से गवर्नमेंट की तरफ से विशाल जमीन मुफ्त में मिल गई थी । लिंबडी के ठाकुर साहब और मिस शार्प की तरफ से दो मकान अस्पताल में बनाने का तय हुआ । राजपूताना के

पोलिस कमिश्नर की पत्नी मिसेस रिवर्स राईट को ओनररी सेक्रेटरी बनाया गया । आने वाले भक्त मंडल की तरफ से आनंदचंद सीपाणी और मैंने दान लेने का कार्य प्रारंभ किया ।

उस अरसे में उत्तमचंद नाम के एक यति वहाँ आए । उनको पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर में जूते पहनकर फिरते हुए देख कर आनन्दचंदजी सिपाणी ने उन्हे जूते बाहर खोलकर मन्दिर में प्रवेश करने के लिये कहा । इस पर वह यति गुस्से होकर गालियाँ बोलने लगा । तब सिपाणीजी ने गुरखा व अन्य नौकरों को बुलाकर यति को मंदिर व धर्मशाला से बाहर जाने के लिये बाध्य किया। मामले को बिगडता देखकर मैंने सिपाणीजी को शांत किया । यति ने नजदिक में सिरोही राज्यगुरु के पास जाकर शरण ली । इस समय श्री योगीराज गुफाओं और जंगलो में ही रहते थे । आबू में उस समय लगभग १८-२० साधु गुरुदेव के प्रति इर्ष्या रखते थे । एक साधारण साधु (श्री योगीराज) के पास रोज सुबह से शाम तक अनेक भक्त और राजा-रजवाडों को आता देख ये सब इर्षा - अग्नि में जल रहे थे । ये सब सिरोही राज्यगुरु के साथ ठहरे यति के साथ मिलकर तकरार करने की कार्यवाही में संलग्न थे । ये लोग दान मिलने में भी अडचन डालते थे । जिससे हमने लिंबडी ठाकुर साहब, मिस शार्प और मिसेज राइट से इस विषय में बात की । उन्होंने A.G.G. और डिस्ट्रीकट मेजिस्ट्रेट से मिलकर उस यति को माऊंट आबू की सीमा के आसपास से बाहर निकालने का हुक्म दे दिया ।

आबू की पुलिस को यह हुक्म दिया गया कि वह सिरोही की पुलिस के साथ मिलकर यति को आबू के आसपास की सीमा से बाहर निकाल दे । सिरोही राज्यगुरु शरणागत यति को सुपुर्द करने के लिये आनाकानी करने लगे । इस पर सिरोही महाराजा के निजी सचीव चन्दुलाल पटेल ने राजगुरु को समझा कर यति को आबू की सीमा से बाहर निकालने में मुख्य भूमिका अदा की । इस प्रसंग के तीसरे दिन देलवाडा के पास की एक गुफा में मेरी श्री योगीराज से भेंट हुई । उस समय चन्दुलाल पटेल यति को लेकर श्री योगीराज के पास आये हुए थे, और सिपाणीजी ने यति को आबू की सीमा से बाहर भिजवाने के लिये जो कार्य किया था उसका वर्णन किया । श्री योगीराज ने उनके और यति के प्रति खूब प्रेमभाव दर्शाया और एकान्त में श्री चन्दुलाल पटेल से कुछ गुप्त वार्ता भी की । इसके बाद चन्दुलाल पटेल उस यति को लेकर आबूरोड चले गये ।

इस प्रसंग के १५ दिन बाद श्री चन्दुलाल पटेल मेरे पास आये और मुझसे कहा कि आज से १५ दिन पहले जब मैं यति के साथ आया था, तब श्री योगीराज ने मुझे फरमाया था

कि आज से पंद्रहवे दिन सिरोही महाराजा की अकस्मात दुर्घटना होगी । इसलिये उस दिन महाराजा को साबधान रहने के लिये कहाना । लेकिन यह बात महाराजा को कहने की मेरी हिम्मत नहीं हुई और आज ही महाराजा माऊंट आबू से मोटर द्वारा आबू रोड जाते हुए दुर्घटनाग्रस्त हो गये । दरबार खुद मोटर चला रहे थे और सिगरेट जलाते समय अचानक दुर्घटना घटी तथा मोटर ३० फीट नीचे गढ्ढे में जा गिरी । महाराजा और ड्राइवर को अस्पताल में छोडकर मैं श्री योगीराज के आर्शीवाद लेने के लिये आया हूँ । मैं उसको साथ लेकर उस गुफा में गया, जहाँ श्री योगीराज थे । श्री योगीराज ने तुरन्त आर्शीवाद दिया और साथ ही साथ मुझे भी आशीर्वाद का एक तार करने के लिये कहा। परिणाम स्वरुप थोडे ही समय में सिरोही महाराजा पूर्ण स्वस्थ हे गये ।

सवंत १९८९ (सन १९३२) के चेत्र सुदी १ को मैने मेरे परिवार को गुरुदेव की भक्ति करने के लिये देलवाडा बुलवाया था । इसका एक खास कारण यह था कि मेरे तमाम सगे संबंधियों को यह फिकर हो रही थी कि कहीं मैं दीक्षा लेकर साधु न बन जाऊँ । उनकी फिकर दूर करने के लिये और श्री योगीराज के दर्शन से उनमें भक्तिभाव की वृद्धी होगी, इस आशय से मेरे कुटुंब को मुंबई से तथा बाद में मेरी बहनों को लिंबडी से अचलगढ बुलाया था । सब लोग भक्ति में शामिल हुए और मेरी फिकर दूर हुई ।

इस समय मुझे श्री योगीराज द्वारा यह जानने को मिला कि डेढ दो वर्ष पहले आप गुरु गुफा में से देलवाडा पधार रहे थे, तब एक भक्त नकी तालाब में डूब कर आत्महत्या की तैयारी में था । इतने में श्री योगीराज ने उसे हाथ पकड कर डूबने से बचा लिया और उसे वचन दिया । उसके मुताबिक श्री योगीराज ने उसे किसी दुसरे भक्त से रु. २५०००/- उधार दिलवाए थे । रुपये लेने वाले व्यक्ति के पास रकम वापस देने को नहीं है, और उधार देने वाले व्यक्ति को अभी रकम की सख्त जरुरत है, जिसके लिये आप फिक्र में थे । यह सुनकर मैंने अपने पास की रोकड पूंजी सात हजार देने की तैयारी दर्शायी और कहा कि बाकी की रकम १८००० रुपये दूसरे भक्तों से लेकर जैसे बने वैसे शीघ्र उस ऋण देने वाले व्यक्ति को पूरी रकम दे दी जाय उसकी कोशिश करुंगा।

थोडे ही दिनों में वह ऋण देने वाला व्यक्ति अपने अपार संकट की बात श्री योगीराज से खानगी में वर्णन कर रहा था, उस समय यह बात कमरे के बाहर बैठे हुए एक श्रीमंत भक्त ने सुन ली । उसने सुना कि ऋण देने वाले व्यक्ति ने भी वह रकम किसी से व्याज पर उधार

लाकर दी थी । उस श्रीमंत भक्त ने जब मुझे इस बाबत पूछा तो, मैंने सारी खरी हकीकत कह दी। वह वयोवृद्ध और श्रध्दालु भक्त था । उसने जब श्री योगीराज से इस बारे में पूछा तो उन्होंने इतना ही कहा कि एक दुखी भक्त के प्राण बचाने के लिये दया आने से मदद करायी थी । इस से अधिक कुछ नहीं फरमाया ।

उस श्रीमंत भक्त की ऐसी भावना हुई कि किसी तरह इस धर्म-संकट को निपटाना चाहिए। मैंने अपनी तरफ से रु. १००००/- देने की इच्छा व्यक्त की । उस वयोवृद्ध भक्त ने बाकी के १५०००/- रुपये मंगाने के लिए अपने बेटों को तार दिया । उसके पुत्र अचानक तार मिलने से घबरा कर रु. ५०००/- अपने साथ लेकर दूसरे ही दिन देलवाडा पहुँच गये और ५०००/- से ज्यादा देने की अनिच्छा प्रकट की । इससे वह वयोवृद्ध भक्त अपने बेटों से नाराज होकर अपने घर गया और जमीन में गाढे गये गहनों को बेचकर पांच हजार रुपये एकत्र कर लिये। इस तरह दस हजार की व्यवस्था हो गई । मुझसे उसने २०० रुपये घर खर्च के लिये रखकर ६८०० रुपये देने के लिये कहा और किसी भी हालत मे गहने नहिं बेचने का मुझसे कबूल करवाया । बाकी के ८२०० कम पड रहे थे उसकी फिकर में था कि सिरोही इलाके का एक भक्त अचानक दर्शन के लिये आया । उसे मेरे प्रति अतिश्रद्धा थी । मैंने उससे उस धर्म-संकट की बात कही । तुरंन्त ही अपनी मोटर में मुझे वह अपने गांव ले गया और ४१०० रुपये खुद के दिये और ४१०० रुपये अपने भाई से दिलवाये ।

इस प्रकार २५०००/- रुपये थोडे ही दिनों में चुका दिये गये (इस घटना में तर्क वितर्क करने वाले की श्रद्धा डगमगा जाए ऐसा था । परन्तु जिसकी श्रद्धा-भक्ति अडिग हो, वही इसमें टिक सकता था ।

इन्हीं दिनों एक समय प्रातःकाल हाल के जाम साहेब श्री योगीराज के दर्शनार्थ देलवाडा आए। उस समय मैं श्री योगीराज के पास सेवा में था । उनके दरवाजे में प्रवेश होते ही श्री योगीराज ने कहा "जाम साहब पधारो ।" उन दिनों जाम साहब श्री रणजीतसिंहजी मौजूद थे, और उनके बाद गद्दी पर कौन आएगा, यह कोई निश्चित नहीं था, क्योंकि रणजितसिंहजी के कोई औलाद नहीं थी । हाल के जाम साहब ने मुझे सावधान किया कि श्री योगीराज की कही हुई भविष्यवाणी किसी को मत कहाना । इसके थोडी देर बाद ही श्री योगीराज ने गुरु गुफा की ओर प्रस्थान किया । मैं और जाम साहब भी पीछे-पीछे चले। रास्ते में मुझे जाम साहब ने पूछा कि आप देलवाडा में श्री योगीराज के पास मेरे आने से कितनी देर पहले से बैठे थे । मैंने

बताया कि लगभग एक घंटा पहले से था । मैंने तुरन्त ही जाम साहब से यह प्रश्न पूछने का कारण पूछा ।

जाम साहब ने बताया कि वह अपने मित्र के साथ (जो कि उस समय उनके साथ ही थे) सुबह-सुबह नकी तलाब पर घूमने के लिए गये थे । उस समय सामने वाली एक गुफा से श्री योगीराज ने हाथ द्वारा इशारा करके हमें बुलाया । हम दोनों तुरन्त गुफा में गए, लेकिन श्री योगीराज वहाँ पर नहीं मिले । इसलिए हम तुरन्त देलवाडा आए । यह बात हो ही रही थी, इतने में श्री योगीराज ने मुझे बुला लिया, इसके बाद श्री जाम साहब से मेरा कोई मिलाप नहीं हुआ ।

जैसा कि श्री योगीराज ने फरमाया था, कुछ समय बाद श्री जाम साहब को राजगद्दी मिली। श्री योगीराज ने यह भी कहा था कि जाम साहब बनने के बाद आप मुझे भूल जाओगे । जाम साहब राजगद्दी पर बैठने के बाद बाह्मणबाडजी श्री योगीराज के दर्शनार्थ आए थे और रु. ७००० श्री योगीराज के चरणों में धरे थे । उस समय लिंबडी के महाराजा भी हाजिर थे । चरणों में धरी हुई भेंट श्री योगीराजने स्वीकार नहीं की । लिंबडी के महाराजा ने यह रकम एनिमल होस्पीटल के लिए स्वीकार करने की विनती की, लेकिन श्री योगीराज ने प्रेम-पूर्वक समझाकर मना कर दिया । इसके बाद जाम साहब सिरोही में शादी के वक्त आते समय और शादी के बाद वापस जामनगर जाते समय श्री योगीराज के दर्शन के लिए पधारे थे । जाम साहब तथा महारानी गुलाब कुंवर उसके पश्चात् करीब आठ साल के बाद श्री योगीराज के दर्शनार्थ अचलगढ़ आए थे ।

इसी दौरान बीकानेर के महाराजा श्री योगीराज के दर्शनार्थ देलवाडा पधारे थे । उस समय बुज़ुर्ग भक्त श्री शिवजीभाई (मढ़डावाले) और मैं तथा तीन अन्य श्रीमंत झवेरी श्री योगीराज के पास बैठे हुए थे । अत्यन्त विनय-पूर्वक श्री गुरु आज्ञा लेकर बीकानेर के महाराजा कमरे में पधारे और श्री योगीराज को साष्टांग दंडवत् प्रणाम किया । इसके बाद हम पांचो जने कमरे के बाहर आकर बैठ गए । आधे घंटे के बाद बीकानेर के महाराजा ने विदा ली। श्री योगीराज ने मुझे अंदर बुलाया और कहा की अभी ही तू जाकर महाराजा को मिल और जैसी तू उचित समझे वैसी बातें कर । अत: मैं बीकानेर नरेश के पास जाकर अपनी पहचान देकर गांधी-इरविन पेक्टवाले लेख सम्बधी बातें की, जिसकी नकल मैंने पहले से ही

भेज दी थी । उनकी मोटरकार तक पहुँचने के बाद भी बीस मिनट तक किसी खास मुद्दे पर हमारी बातचीत चलती रही । दरबार ने मेरे प्रति अनहद प्रेम दर्शाते हुए हाथ मिलकर विदा ली।

इन दिनों बीकानेर अस्पताल की लेडी डाक्टर शिवकामु बहिन श्री योगीराज के दर्शनों के लिए बार-बार आती रहती थी । उन्हें हिंदी और गुजराती भाषा का ज्ञान बहुत ही अल्प होने से गुरुदेव योग-वशिष्ट वगैरह अध्यात्मिक ज्ञान भंडार की जो बातें हिंदी में करते थे उसका मैं अंग्रेजी में अनुवाद करता था । इस प्रकार का सुनहरा अवसर मिलने से मुझे अपूर्व बोध प्राप्त हुआ।

एक बार लेडी डॉक्टर शिवकामु बहिन श्री योगीराज के पास आकर जोर से रोने लगी । रोने का कारण पूछने पर उन्होंने इवनिंग न्यूज पेपर में एसोसिएटेड प्रेस द्वारा भेजा गया समाचार पढकर सुनाया कि उनका भाई, जो तांजोर में B.A. की पढाई कर रहा था, वह तालाब में डूब कर मर गया । इसलिये वह कल ही रवाना होकर तांजोर जायेगी । श्री योगीराज ने तुरन्त फरमाया कि, पेपर में छपी हुई खबर गलत है । मैंने उन्हें अंग्रेजी में समझाया कि बहिन तुम क्यों रोती हो ? तुम्हारे भाई सही सलामत है । इवनिंग न्यूज अखबार में छपी हुई खबर बिल्कुल गलत है । फिर भी उन बहन को लगा कि यह बात उन्हें सिर्फ सांत्वना देने के लिये श्री योगीराज ने कही है । मैंने उन्हें कहा कि सूर्य पश्चिम में उदय हो सकता है, लेकिन श्री योगीराज की वाणी कभी असत्य नहीं हो सकती ।

दूसरे दिन दोपहर को शिवकामु बहिन हँसते हुए श्री योगीराज के पास आयी और कहा कि कल यहाँ से विदा होने के बाद मैंने आपका कथन बीकानेर दरबार को कहा तब उन्होंने जोर देकर कहा कि श्री योगीराज का कथन कदापि असत्य नहीं हो सकता । इसलिए शीघ्र तांजोर अर्जन्ट तार द्वारा पूछवाने पर अभी-अभी जबाब आया है कि मेरा भाई सकुशल है । बाद में पत्र आने पर मालूम हूआ कि कॉलेज में पढने वाले तीन विद्यार्थी तालाब में डूब कर मर गये, यह बात सत्य थी लेकिन उनके भाई का नाम अखबर में भूल से छप गया था । यह बात विद्युत-गति से पूरे माऊँट आबू में फैल गई । जिससे अनेक यूरोपियन ओफीसर वगैरह बीकानेर के महाराजा के बंगले में पूछताछ करने के लिये आने लगे। उनको जबाब दे देकर थक गये । देलवाडे में भी अनेक छोटे-बडे लोग इस बाबत पूछताछ कर रहे थे । जब मैंने उनको सत्य हकीकत बताई तो श्री योगीराज के प्रति उनके भक्तिभाव में वृद्धि हुई थी ।

इनके बाद श्री योगीराज अचलगढ पधारे । मैं भी सपरिवार उनके साथ अचलगढ गया था। आनन्दचंदजी सिपानी वगैरह बहुत से गुरुभक्तों के परिवार भी अचलगढ आए थे । श्री योगीराज ज्यादातर भुगुआश्रम के पास जंगल और गुफाओं में रहते थे । इस समय श्री योगीराज ने आनन्द चंदजी सिपानी की एक कठिन परीक्षा ली । उनके आठ साल के बेटे फतेह बाबू को अपना चेला बनाने के लिये बोहराने की मांग की । दिक्षा मुहूर्त भी नजदीक में ही बताया और उसका महोत्सव भी धूमधाम से मनाया गया । सिपानीजी की चौथी बार की पत्नी अपने पुत्र को दिक्षा देने के विरुद्ध थी । आनन्दचंदजी द्वारा बहुत समझाये जाने के बाद अपने पुत्र को श्री योगीराज जैसे महापुरुष का शिष्य बनाने की सहमति दी । जब ये समाचार कलकत्ता पहुँचे तो वहाँ से दूसरे सगेसंबंधी भी अचलगढ आ गये और उन्होंने भी सहमती दी । अंत में श्री योगीराज ने दीक्षा न देते हुए ऐसा फरमाया कि अठारह साल की उम्र होने के बाद लडके की यदि पूरी इच्छा हुई और सभी संबंधी भी दिक्षा दिलवाने के लिये राजी होंगे, तब दिक्षा देनी या नही, इस पर विचार किया जायेगा । जैनों में उस समय बाल- दिक्षा के पक्ष और विपक्ष में विवाद चल रहा था । परन्तु बालिग होने पर ही दिक्षा देनी चाहिये, ऐसा इस घटना से प्रतीत होता है ।

इसी अरसे में एक अंधेरी रात को श्री योगीराज अचलगढ से जंगलों में जाने के लिये रवाना हुए । मैं भी उनके साथ गया । लगभग दो घंटे चले । बाद में हम एक उंची टेकरी पर पहुँचे। तब रात के लगभग ग्यारह बजे थे । आधे घंटे बाद श्री योगीराज ने मुझे फरमाया कि शीघ्र अचलगढ चला जा । उस समय नजदीक से शेर-चीतों की आवाजें आ रही थी । लेकिन मेरे पास टोर्च थी, इस घमंड से मैं चल पडा । इतने में श्री योगीराज ने मुझे वापस बुलाया और कहा कि तेरे पास की टोर्च मुझे देते जा । टोर्च देकर मैं रवाना हुआ । अर्ध-रात्रि और घनघोर अंधेरा । किस रास्ते से अचलगढ जाना, कुछ सूझ नहीं रहा था । उपर से शेरों का भय । ऐसे में "जय गुरुदेव" का महामंत्र बोलता हुआ मैं चलने लगा । दस मिनिट में एक खड्डे में गिर गया। खास कोई चोट नहीं आई और उठते ही देखा कि अचलेश्वर का मंदिर नजदीक है । इससे मैं चिन्ता मुक्त होकर अचलेश्वर मंदिर चला गया । मन में कई तरह के विचार आये कि जाते समय तो करीब दो घंटे लगे थे और लौटते हुए दस मिनिट में कैसे आ गया ? (यह पहेली आज तक मेरे लिये अनसुलझी है) अचलगढ उपर जाते हुए तालाब के किनारे एक बाघ को पानी पीते हुए देखा । मैं वही "जय गुरुदेव" वाला महामंत्र रटते हुए धीमी गति से चलते हुए लगभग बारह बजे अपने कमरे में पहुँच गया । मेरी पत्नी मेरी चिंता कर रही थी । उसने कहा कि पुत्र चंद्रकांत जिसकी आंखे बहुत ही दुःख रही थी, पांच मिनिट पहले नींद में जोर से आवज लगा कर बोला कि पिताजी आ रहे है, और मेरी आंखे आजसे सातवें दिन बिलकुल

ठीक हो जाएगी । बिना किसी इलाज के चन्द्रकांत की आंखे ठीक हो गई । उस समय चंद्रकांत चार वर्ष का था ।

इन्ही दिनों एक बार भृगु आश्रम में आनन्दचंदजी सिपानी ने मुझे भांग पिलाई जिसका नशा चढा हुआ था । तब गुरुदेव मुझको संबोधित कर उपदेश दे रहे थे । श्री योगीराज ने फरमाया कि तेरी आवाज बुलन्द है सो जोर से आवाज देकर अचलगढ के मुनीम को यहां से आवाज दे कि बन्दूक सहित सब पुलिस को लेकर भृगु आश्रम आ जाओ । भांग पी हुई होने के कारण मैंने जोर से आवाज लगाई जिसे मुनीम ने बराबर सुन ली । और पन्द्रह मिनिट में ही बंदूकधारी पुलिस के साथ भृगु आश्रम आ पहुँचे । श्री योगीराज ने सब भक्तों को बिना आरती किये ही तुरन्त अचलगढ जाने को कहा । और मुनीम से कहा कि श्रीमंत औरतें हमेशा सोने और जवाहरत के गहने पहन कर आती है, इसलिये उन्हें लूटने के लिये लुटेरों की एक टोली नजदीक ही एक टेकरी के पीछे छिपी हुई है । इसलिये सावधानी पूर्वक सबको साथ ले जाओ। लुटेरे भी पुलिस पार्टी को आई देख भाग गये । सारांश यह है कि ज्ञानी की छाया में रहने वाले भक्तों का ऐसे विघ्नो में बचाव हो जाता है ।

सवंत १९८९ (सन १९३२) को असाढ सुदी पूनम (गुरु-पूर्णिमा) के पहले ही श्री योगीराज देलवाडा आ गये । गुरु-पूर्णिमा धाम-धूम से मनाई गई । बारीश का मौसम शुरु हो जाने की वजह से हमारे कुटुंब को छोडकर बाकी सब भक्तों को अपने वतन जाने की आज्ञा दे दी । मेरी पत्नी ने भी बम्बई जाने की आज्ञा ले ली और श्रावण सुदी पंचमी को मैं सपरिवार रवाना होने की तैयारी करके श्री योगीराज के पास विदा लेने के लिए गया । श्री योगीराज ने फरमाया कि तुम दोनों पति-पत्नि जीवन पर्यंत चौथे व्रत (ब्रह्मचर्य व्रत) पालने का नियम लो । मैं नियम लेने के लिये तुरन्त खडा हो गया, लेकिन मेरी पत्नी विचार करने लगी ।

तब श्री योगीराज ने फरमाया कि तुम दोनों जने मैत्री भाव से रहो । तुम्हारे तीन पुत्र और तीन पुत्रियाँ मिलकर छः संतानें काफी है । ये शब्द बोलते – बोलते श्री योगीराज की आँखों में आँसू भर आए । फिर मुझे पूछा कि क्या कभी केवली भगवान गलती कर सकते हैं? मैंने कहा कि कभी भी भूल नहीं कर सकते । तब श्री योगीराज ने जैन शास्त्रों का एक उदाहरण दिया कि नेमीनाथ भगवान ने यह जानकर कि तापस के श्राप से द्वारिका नगरी जलकर भस्म हो जायेगी, श्री कृष्ण भगवान को कहा कि जब तक द्वारिका में आयम्बिल तप चालू रहेगा, तब तक तापस का श्राप फलीभूत नहीं होगा । इसलिए श्री कृष्ण भगवान ने द्वारिका में बारी मुताबिक हर घर में आयाम्बिल करने की आज्ञा निकाल दी । आखिर दो वर्ष बाद एक बुढिया की बारी आई। उसी दिन उसका इकलौता पुत्र बारह साल बाद परदेश से घर

लौटा । पुत्र बहुत ही मातृ-प्रेमी होने से उसने कहा कि माता खीर का भोजन ग्रहण करे तो ही मैं ग्रहण करुंगा। पुत्र की जिद्द की वजह से बुढिया ने आयम्बिल व्रत भंग करके खीर का भोजन ग्रहण किया । परिणाम स्वरुप उसी समय द्वारिका नगरी जलकर भस्म हो गई । सिर्फ श्री कृष्ण और बलदेवजी बच गये । दो साल बाद यह बनाव बनने वाला है, यह जानते हुए भी श्री नेमीनाथ भगवान ने किस लिये उस दिन और किसी के यहाँ आयाम्बिल करवाने की सूचना श्रीकृष्ण को नहीं दी । कारण कि जो होनेवाला है, वह होगा, ऐसा श्री नेमीनाथ भगवान जानते थे। इस प्रकार के उपदेश और दृष्टांत देते जा रहे थे । साथ ही समय-समय पर यह भी कहते जाते थे कि तुम्हारे छः सन्तान काफी है, इसलिये मैत्री भावना से रहना। आखिर हमको दो घंटे रोककर बम्बई जाने की आज्ञा दे दी ।

बम्बई जाते समय रास्ते में खूब विचारने से मुझे दृढ निश्चय हो गया कि सातवी संतान होने के समय मेरी पत्नि की मृत्यु रुपी आफत की स्पष्ट आगाही है । उससे बचने का एक ही उपाय करुणा-पूर्वक स्पष्ट शब्दों में श्री योगीराज ने बता दिया कि जीवन पर्यन्त ब्रह्मचार्य का पालन करना । यह बात मेरी पत्नि को भी समझाने से वह समझ गई किन्तु बम्बई जाने के बाद इस आज्ञा का पालन न हो सका । परिणाम स्वरुप सवंत १९९० के पौष वदी एकम की प्रभात को पुत्र को जन्म देकर वह स्वर्ग सिधार गई । डेढ़ महिने बाद वह पुत्र भी मर गया । आगे से जानते हुए और उसका उपाय हाथ में होते हुए भी जो होना निश्चित था, उसमें फर्क नहीं पडा।

सवंत १९८८ में पंडितजी लालन श्री योगीराज के समागम में अचलगढ रहे थे । वे एक बार व्याख्यान पूरा होने के बाद पधारे । देर से आने का कारण उन्होंने यह बताया कि उनका नियम है कि हमेशा अमुक सामायिक करते हैं । श्री योगीराज ने फरमाया कि हमेशा २१६०० सामायिक करो । यह सुनकर लालनजी चकित हो गये । श्री योगीराज ने सामायिक का अर्थ समझाते हुए कहा कि समभाव में रहना ही सामायिक है । चौबीस घंटे में मनुष्य लगभग २१६०० श्वासोच्छवास लेता है । जितने श्वासोच्छवास समभाव में जाये वह सब सामायिक है । श्री योगीराज की ऐसी अपूर्व बातें सुनकर सबको बहुत आनन्द होता था ।

श्री योगीराज के कथनानुसार मैंने श्रीमद् राजचन्द्र की पुस्तकों के अलवा योग वशिष्ट, समयसार (बनारसी दास की टिका सहित) तत्वार्थ अमिगम सूत्र तथा ज्ञानार्णव मंगवा कर पढे और मनन किया । लीलाधर ब्राह्मण ने मेरे लिये जिस पुस्तक की रचना की थी उसका कोई भाग मेरे द्वारा पढवाते समय श्री योगीराज समाधिस्थ हो जाते थे । एक बार उन्होंने मुझे कहा कि उस ब्राह्मण को मैंने तुम्हारे पास भेजा था । उसमें जो शक्ति थी, वह महापुरुष का एक अंश था ।

सवंत १९८९ में मैं श्री योगीराज के दर्शनार्थ देलवाडा आया तब अमेरिका से काजू का आर्डर आया हुआ था । उसमें करीब पांच हजार रुपये नफा मिलने की उम्मीद थी, किंतु उस

समय रकम की अडचन थी जिसकी मुझे फिक्र थी । इतने में श्री योगीराजने मुझे आज्ञा दी कि बम्बई में शान्तिदास आसकरण नामक एक भक्त है, उससे मैं मिलूं और तीन माह के लिये २००००/- रुपये ब्याज पर देने के लिये कहूँ । माल अमेरिका चढाने के बाद ब्याज सहित रुपये वापस उन्हें लौटा दूं । मैं बम्बई मे सेठ शांतिदास आसकरण के बंगले पर गया । उस समय वे पूना गये हुए थे ।

उनके पुत्र रविलाल ने फोन से पूना बात की । उसने मुझे वहा कि मैं अमुक ट्रेन से रवाना होकर पूना जाऊँ। वहाँ स्टेशन पर अमुक नंबर की कार मेरे लिये तैयार मिलेगी । उसमें बैठ कर पिताश्री से मिलने चले जाना । मैं उस मुताबिक पूना गया । सेठ शांतिदास ने मेरी बात सुनकर अपने पुत्र रविलाल को फोन से बीस हजार का चेक मुझको देने के लिये कह दिया । शिपमेंट होने के बाद तीन महिने में मैंने वह रकम व्याज सहित सेठ शांतिदास आसकरण को वापिस लौटा दी । इस प्रकार एक अनजान व्यक्ति को सेठ शांतिदास आसकरण इतनी बडी रकम दे दे, यह एक आश्चर्य की बात थी ।

शिपमेंट का काम खत्म होने के पश्चात संवत १९८८ की शीत ऋतु में मैं अचलगढ रहा था तब मुझे पेचिस की बीमारी हो गई थी । दिन में करीब ४०-५० बार हाजत के लिए जंगल जाना पडता था । खूबी की बात यह थी कि जब तक मैं श्री योगीराज के समीप सहता, तब तक सब ठीक रहता । करीब तीन हफ्ते तक मुझे यह बीमारी रही । कोई भी इलाज न हो सका । शरीर एक दम क्षीण हो गया ।

इन्हीं दिनों एक मारवाडी गृहस्थ ने मालपुआ का भोजन रखा । सभी भक्तों को आमन्त्रण दिया गया । मुझे भी आग्रह किया गया, लेकिन बीमारी की वजह से मेंने आमंत्रण स्वीकार नहीं किया। अत: उस मारवाडी सज्जन ने श्री योगीराज से आज्ञा दिलवायी की दो मालपुआ खा लेना। मैं किसी तरह धीरे-धीरे चलकर भोजन के लिये पहुँचा, और उस भाविक भक्त से विनती की मेरे लिये दो छोटे-छोटे एक रुपये जितनी साइज के मालपुएँ बनवा दे । आश्चर्य की बात है कि इन मालपुओं ने मेरे लिये दवाई का काम किया । उसी दिन से मेरी दस्त बन्द हो गई और शरीर में नये रुधिर का संचार प्रारंभ हो गया। उसके बाद मुझे बम्बई जाने की आज्ञा मिला गई ।

सवंत १९९९ में अजमेर में स्थानकवासी जैन साधु सम्मेलन का आयोजन हुआ था । वहाँ से वापस लौटते हुए शामजी स्वामी देलवाडा पधारे । उस समय मैं भी श्री योगीराज के साथ देलवाडा में था । श्री योगीराज और श्री शामजी स्वामी परस्पर खूब प्रेम से मिले, श्री योगीराज ने उन्हें साथ ले जाकर देलवाडा के भव्य मंदिरों के दर्शन करवाये । इस समय श्री शामजी स्वामी ने श्री योगीराज को याद दिलवाई कि सवंत १९६३ में जब श्री योगीराज गिरनार पधारे थे, तब वे उनसे मिले थे और श्री योगीराज ने उन्हें एक हस्त- लिखित पुस्तक भेंट की

थी । श्री शामजी स्वामी ने भी अपने गुरु के जीवन-चरित्र की पुस्तक श्री योगीराज को दी थी। इस बातचीत से मुझे एहसास हुआ कि सवंत१९६२ में श्री योगीराज काठियावाड में विचरे थे और शत्रुंजय पालीतना आदि होते हुए सवंत १९६३ में जूनागढ गिरनार गये थे ।

उसके पश्चात पंडित श्री रत्नाचंद्र देलवाडा पधारे थे। श्री योगीराज से बहुत ही प्रेमपूर्वक मिलाप हुआ था और शास्त्रों के रहस्य की बातें हुई थी । साधु शब्द की व्याख्या पूछने पर श्री योगीराज ने कहा "जितना प्रेम सारे विश्व में फैला हुआ है, उतना प्रेम साधु के एक रोम में होना चाहिये" । इतना कहते ही श्री योगीराज के सम्पूर्ण रोम खडे हो गये । इस व्याख्या से रत्नाचंद्र स्वामी बहुत ही प्रसन्न हुए । श्री योगीराज ने साथ में चलकर उन्हें गुफाओं और मन्दिरों के दर्शन करवाये ।

उसके बाद कविवर्य श्री नानचंद्रजी स्वामी तथा संत बालजी अचलगढ पधारे थे । और श्री योगीराज के साथ तीन दिन तक रहे थे । तब चांदा निवासी सेठ चैनकरणजी गुलेच्छा, आगरा वाले श्री मोहनलालजी लक्ष्मीचंदजी वैद तथा मैं भी अचलगढ था । कविवर्य और श्री योगीराज अत्यन्त प्रेम-पूर्वक साथ में रहकर मन्दिर, पहाड और गुफाओं को देखते, वर्णन करते और खानगी में शास्त्रों के रहस्य और मर्म की अपूर्व चर्चा करते । इन्ही दिनों महात्मा गांधी ने स्वयं के हाथों एक पोस्टकार्ड श्री योगीराज को लिखा जिसमें बंदरों और कुतों को नहीं मारने की बात स्वीकार की गई थी । इस पत्र का जबाब श्री योगीराज ने कविवर्य से लिखवाया था ।

श्री नानचंद्रजी महाराज ने मुझे कहा कि लिंबडी ठाकुर साहब ने मुझे श्री योगीराज के सम्बन्ध में अपने अनुभवों की बात कही थी और ऐसे महापुरुष के समागम में आने का विशेष अनुरोध किया था । श्री योगीराज के सिर्फ तीन दिन के समागम में उन्हें अवर्णनीय आनन्द प्राप्त हुआ था और ऐसे ज्ञानी महापुरुष की सेवा में अटल रहने की मुझे आज्ञा दी थी ।

सवंत १९७८ से ही मेरे प्रति श्री योगीराज ने जो अत्यन्त प्रेम भाव दिखाया उससे उनकी तरफ मेरा आकर्षण दिन-प्रतिदिन बढता जा रहा था । सवंत १९७८ से १९८६ तक में लगातार उनके दर्शन के लिए आता रहता था तब भविष्य में होने वाली घटना की इतनी खूबी से मर्म की बात कहते थे कि उसका वास्तविक खयाल तो घटना घटित होने के बाद ही समझ आता था । सवंत १९८७ और १९८८ में दो वर्षो में श्री योगीराज ने मुझ पर कृपा की बरसात करके मेरी योग्यता से भी अधिक महापुरुषों की ज्ञान-शक्ति आदि का प्रत्यक्ष अनुभव कराया था । अतएव मैं आपश्री को जगत के एक महान से महान योगीराज और साकार देह-धारी परम पवित्र अवतारी परमात्मा के रुप में दृढतापूर्वक मानने लगा था । मेरे अनेक अनुभवों का तथार्थ वर्णन कलम द्वारा लिखना असंभव है । फिर भी मैं उसकी थोडी सी झलक पुस्तक के अंत में दिखाऊंगा।